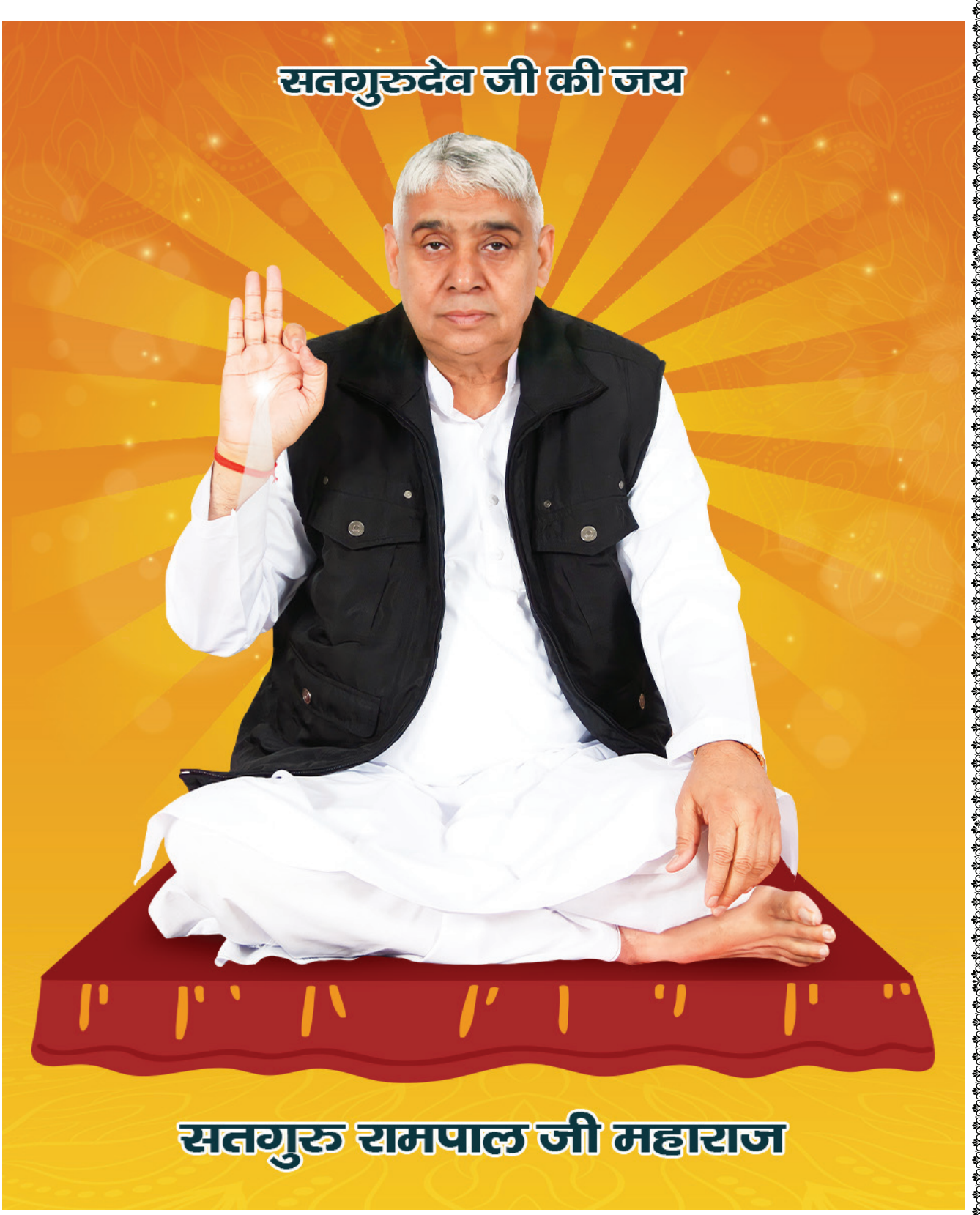

सतगुरुदेव जी की जय
सतगुरु रामपाल जी महाराज

बंदी छोड़ कबीर साहेब जी की जय

परमेश्वर कबीर साहेब जी

बंदी छोड़ गरीबदास जी महाराज की जय

संत गरीबदास जी महाराज

स्वामी रामदेवानंद महाराज जी की जय

स्वामी रामदेवानंद जी महाराज

बंदी छोड़ सतगुरु रामपाल दास महाराज जी की जय

जगतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज

परमेश्वर कबीर साहेब जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

सतगुरु कबीर साहेब स्वयं पूर्णब्रह्म (सतपुरुष-परम अक्षर ब्रह्म) हैं। यह परम अक्षर ब्रह्म (अविनाशी) भगवान वैसे तो चारों युगों में आते हैं। सतयुग में सत सुकृत नाम से, त्रेता युग में मुनीन्द्र नाम से, द्वापर युग में करुणामय नाम से और कलयुग में वास्तविक (कविर्देव) कबीर नाम से इस मृत मण्डल में आए हैं।

कलयुग में परमेश्वर कबीर(कविर्देव) विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को लहरतारा तालाब काशी (बनारस) में एक कमल के फूल पर ब्रह्म मुहूर्त में एक नवजात शिशु के रूप में प्रकट हुए। स्नान करने के लिए गए नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति को प्राप्त हुए। काजी धार्मिक पुस्तक कुर्आन के आधार पर नामांकरण करने लगे तो उस पुस्तक (कुर्आन कतेब) के

सर्व अक्षर कबीर-कबीर-कबीर..... हो गए।

साहेब कबीर (कविर्देव) ने स्वयं बोलकर कहा कि मेरा नाम 'कबीर' ही होगा। साहेब कबीर ने सुन्नत करने के समय आए व्यक्ति को कई लिंग दिखाए। वह व्यक्ति भयभीत होकर सुन्नत किए बिना ही चला गया।

पाँच वर्ष की आयु में कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने 104 वर्षीय स्वामी रामानन्द जी का शिष्य बन कर स्वामी रामानन्द जी को सतलोक का मार्ग बताया तथा सतलोक दिखाया। एक समय रामानन्द जी का दिल्ली के बादशाह सिंकदर लौधी ने कत्ल कर दिया। कबीर परमात्मा ने उनको तुरंत जीवित कर दिया।

सिकंदर राजा का जलन का असाध्य रोग हाथ लगाते ही समाप्त कर दिया। सिकंदर राजा ने एक गाय के तलवार से दो टुकड़े करवाए तथा कहा कि आप (कबीर साहेब) अपने आप को परमात्मा कहते हो तो इस मृतक गाय को जीवित कर दो। उसी समय कबीर

साहेब ने हाथ स्पर्श करते ही गाय को तथा उसके गर्भ में बछड़े के भी दो टुकड़े हो गए थे, वो भी जीवित किया तथा दूध की बाल्टी भर दी और कहा कि :-

गाय अपनी अम्मा है, इस पर छुरी ना बाह।
गरीबदास घी दूध को, सर्व ही आत्म खाय।।

साहेब कबीर की कोई पत्नी नहीं थी। शेखतकी व राजा सिंकदर लौधी की अज्ञानता हटाने के लिए जो कह रहे थे कि हम तो आपको भगवान तब मानें, जब आप इन मुर्दों को जीवित कर दो। फिर कबीर साहेब ने दो बच्चों कमाल व कमाली को मुर्दे से जीवित किया तथा अपने बच्चों के रूप में पालन-पोषण किया। साहेब कबीर के माता-पिता नहीं थे। वे स्वयंभू थे।

काशी शहर में तीन दिन भंडारा किया :- कबीर परमेश्वर जी के साथ अध्यात्म ज्ञान चर्चा में सब ब्राह्मण जो गुरू पद पर विराजमान थे तथा सब मंडलेश्वर व गिरी, पुरी, नाथ आदि निरूत्तर हो गए

थे तथा काजी, मुल्ला, शेख सब अध्यात्म ज्ञान चर्चा में हार चुके थे। तब दोनों धर्मों के धर्म प्रचारकों ने कबीर जी को काशी नगर से भगाने के लिए षड़यंत्र रचा। उन्होंने झूठी चिट्ठी कबीर जी जुलाहे के नाम से लिखी कि कार्तिक महीने का शुक्ल पक्ष चौदस (चतुर्दशी) माग शीर्ष (मंगसर) माह की कृष्ण पक्ष प्रथमा तक तीन दिन का भोजन-भण्डारा करेगा। लड्डू, जलेब, बर्फी आदि मिठाई होगी। प्रत्येक भोजन के बाद एक दोहर (कीमती कंबल, उस समय का), एक मौहर (दस ग्राम सोने का सिक्का) दक्षिणा में देगा। प्रत्येक आश्रम के सब संत-भक्त आमंत्रित हैं। अन्य घूमने-फिरने वाले बाबा भी आमंत्रित हैं। निश्चित तिथि को कबीर परमेश्वर जी स्वयं ही केशव नाम के बनजारे का रूप धारण करके नौ लाख बैलों के ऊपर बड़े-बड़े थैलों में पका-पकाया भोजन लेकर आए। तीन दिन अठारह लाख साधुओं को तथा अन्य

काशी वालों को भोजन खिलाया। दक्षिणा भी दी।

120 वर्ष तक अपने सतमार्ग व सतलोक की जानकारी देकर मगहर स्थान पर जिला संत कबीर नगर (पुराना बस्ती जिला) नजदीक गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में लाखों भक्तजनों तथा दो नरेशों {बिजली खाँ पठान (मगहर के नवाब) तथा बीर सिंह बघेल (काशी नरेश)} की उपस्थिति में माघ महीना (महा महीना) शुक्ल पक्ष एकादशी को सशरीर सत्यलोक चले गए। परमेश्वर कबीर जी ने एक चद्दर नीचे बिछाई तथा एक ऊपर ओढ़ी थी। जब ऊपर वाली चद्दर उठाई तो शरीर नहीं मिला था। शरीर के स्थान पर सुगंधित फूल पाए थे।

विक्रमी संवत् 1575 (सन् 1518) में वह परम शक्ति अपने परमधाम (सतलोक-सत्यधाम) में वापिस सशरीर चले गए तथा आकाशवाणी की कि देखो! मैं सत्यलोक जा रहा हूँ। उपस्थित श्रद्धालुओं ने ऊपर को देखा तो

एक प्रकाशमय शरीर युक्त परमेश्वर कबीर जी आकाश में जा रहे थे।

हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने आधे-आधे फूल तथा एक-एक चद्दर बांट कर मगहर नगर में साथ-साथ सौ फुट के अन्तर पर दो यादगारें बना रखी हैं जो आज भी उपरोक्त सत्य घटना की साक्षी हैं तथा लहरतारा तालाब भी आज प्रत्यक्ष प्रमाण है, वहाँ कबीर पंथी दो आश्रम बने हैं जो यही सत्य विवरण बताते हैं।

गरीबदास जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय

महाराज गरीबदास जी का प्राकाट्य सन् 1717 व विक्रमी संवत् 1774 को वैशाख उतरते की पूर्णिमा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में श्री बलराम जी के घर माता रानी की कोख से गाँव छुड़ानी, जिला झज्जर, राज्य-हरियाणा में हुआ।

विक्रमी संवत् 1784 में बन्दी छोड़ कबीर साहेब (कविर्देव) ने सतलोक से आकर महाराज जी को दर्शन व दीक्षा दी। जब महाराज जी गऊ चराने के लिए कबलाना गाँव की तरफ लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर खेतों में गए हुए थे जिसे नला खेत कहते हैं।

महाराज जी की छः संतानें थीं :- चार लड़के और दो लड़कियाँ। आप जी ने विक्रमी संवत् 1835 (सन् 1778) भादवा मास (भाद्र) की शुक्ल पक्ष की द्वितीया

(दूज) को सतलोक गवन किया। गाँव-छुड़ानी में आप जी के शरीर का अंतिम संस्कार कर दिया गया। उस पर एक यादगार छतरी साहेब बनी हुई है। इसके बाद उसी शरीर में प्रकट होकर (वही आयु 61 वर्ष की) सहारनपुर (उत्तर-प्रदेश) में 35 वर्ष रहे। वहाँ भी आपके नाम से यादगार छतरी साहेब बनाई हुई है। चिलकाना रोड़ से कलसिया सड़क निकलती है, उस पर आधा किलोमीटर चलकर बायीं तरफ यादगार बनी है। पास में ही श्री लालदास जी महाराज का प्रसिद्ध बाड़ा है। जो संसार में प्रत्यक्ष प्रमाण है कि परमात्मा बिना माँ के भी शरीर में आ सकते हैं।

प्रार्थना

सर्व परमात्मा (सतगुरु) प्रेमियों से प्रार्थना है कि महाराज कबीर साहेब व गरीबदास जी की वाणी से यह ''नित्य नियम'' का गुटका आपके नित्य पाठ के लिए छपवाया गया है ताकि शुद्धिपूर्वक नित्य पाठ करके आत्मा का कल्याण कर सकें। बन्दी छोड़ कबीर साहेब तथा गरीबदास जी महाराज की वाणी में यह विशेषता है कि इसके नित्य पाठ से आत्मा में दुष्कर्म त्यागने व भगवान चिन्तन की शक्ति आती है। बन्दी छोड़ कबीर साहेब व गरीबदास जी महाराज की वाणी स्वसिद्ध है। इसके नित्य पाठ से ज्ञान यज्ञ का लाभ होता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति को सर्प काट ले और वह मूर्छित हो जाए तो गारडू (सर्प काटे का अध्यात्मिक इलाज करने वाला व्यक्ति) कुछ श्लोक (मन्त्र) पढ़ता है। कुछ समय में वह मूर्छित व्यक्ति होश में आ जाता है तथा जीवित

हो जाता है। ठीक इसी प्रकार आत्मा पर दुष्कर्मों का विष चढ़ा हुआ है जिससे आत्मा काम क्रोध, मोहवश होकर मूर्छित पड़ी है। जो वाणी का पाठ करने से होश में आ जाती है। फिर परमात्मा का ध्यान, सुमरण, प्रभु गुणगान गुरु धारण करके काल के जाल से मुक्त हो जाती है। कुछ रोग भी वाणी पाठ से कट जाते हैं। यदि पूर्ण संत से नाम लेकर विश्वास करके नित्य पाठ किए जाएँ। परिवार में सुख, धन वृद्धि, कुछ कार्य सिद्ध भी नाम जाप तथा वाणी के पाठ से होते हैं क्योंकि यह ज्ञान यज्ञ है। यह निश्चय कर मानें। परंतु पूर्ण मुक्ति के लिए पूर्ण गुरु की तलाश करें तथा नाम लेकर गुरु वचन में चलें और अपना जीवन सफल करें।

नित्य पाठ का अर्थ यह है कि जो वाणी (सतगुरु वचन) में लिखा है उस पर अमल करना है। उसी प्रकार अपनी रहनी व करनी करें।

मेरी गुरु प्रणाली : –

1. बन्दी छोड़ कबीर साहिब जी महाराज
   काशी (उत्तर प्रदेश)
2. बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज
   गांव-छुड़ानी, झज्जर (हरियाणा)
3. संत शीतलदास जी महाराज
   गांव-बरहाना, जिला-रोहतक (हरियाणा)
4. संत ध्यानदास जी महाराज
5. संत रामदास जी महाराज
6. संत ब्रह्मानन्द जी महाराज
   गांव-करौंथा, जिला - रोहतक (हरियाणा)
7. संत जुगतानन्द जी महाराज
8. संत गंगेश्वरानन्द जी महाराज
   गांव-बाजीदपुर (दिल्ली)

9. संत चिदानन्द जी महाराज
गांव-गोपालपुर धाम, सोनीपत (हरियाणा)

10. संत रामदेवानन्द जी महाराज
तलवंडी भाई, फिरोजपुर (पंजाब)

11. संत रामपाल दास महाराज

सतलोक आश्रम

हिसार – टोहाना रोड़, बरवाला,
जिला – हिसार (हरियाणा)

☎ 8222880541, 8222880542, 8222880543
8222880544, 8222880545

E-mail : jagatgururampalji@yahoo.com
Visit us at : www.jagatgururampalji.org

विषय सूची

1.	मंगलाचरण	1
2.	मन्त्र	2
3.	गुरुदेव का अंग	3
4.	साहेब कबीर की वाणी गुरुदेव के अंग से	15
5.	सतगुरु महिमा	18
6.	सुमिरन का अंग	27
7.	सातों वार की रमैणी	30
8.	अथ सर्व लक्षणा ग्रन्थ	31
9.	ब्रह्म बेदी	33
10.	असुर निकंदन रमैणी	40
11.	रक्षा मंत्र	49
12.	संध्या आरती	50

13. अन्न देव की आरती (भोजन खाने से पहले बोली जाने वाली वाणी) 67
14. अन्न देव की आरती (भोजन खाने के बाद बोली जाने वाली वाणी) 68
15. पाठ प्रकाश के समय विनती 71
16. भोग लगाने की विधि 76
17. शंका – समाधान 90
18. ब्रह्म गायत्री जाप (प्रथम मंत्र) 99
19. शरीर (पिण्ड) में बने कमलों (चक्रों) के चित्र 100

नित्य पाठ करने की समय सारणी :–

1. पृष्ठ नं. 1 से 39 तक सुबह के पाठ (नित्य–नियम)
2. पृष्ठ नं. 40 से 49 तक असुर निकंदन रमैणी

(दोपहर के 12 बजे से रात्रि के 12 बजे तक कभी भी पढ़ सकते हैं।)

3. पृष्ठ नं. 50 से 66 तक संध्या आरती शाम के समय करें।
4. पृष्ठ नं. 67 से 70 तक अन्न देव की आरती खाना खाने से पूर्व व बाद में करें।

नोट :– ज्ञान प्राप्ति के लिए भक्तजन जब चाहें किसी भी पृष्ठ को किसी भी समय पढ़ सकते हैं।

सतगुरूदेव की जय
बन्दी छोड़ कबीर साहेब जी की जय
बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज जी की जय
स्वामी रामदेवानंद महाराज जी की जय
बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल महाराज जी की जय
सर्व संतों की जय, सर्व भक्तों की जय

आदरणीय गरीबदास जी साहेब की वाणी

॥ अथ मंगलाचरण ॥

गरीब नमो-नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरवस दीन्हीं।1।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुर्बान।2।
नराकार निर्बिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निर्गुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुंनं।3।
सोहं सुरति समाप्तं, सकल समाना निरति लै।
उज्ज्वल हिरंबर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।4।

गरीब, जो सुमरत सिद्धि होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।5।
आदि गणेश मनाऊँ, गणनायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यौ लाऊँ, आदि अंत कर हूँ सेवा।6।
परम शक्ति संगीतं, रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अबिगत गुणह अतीतं, सत्यपुरुष निर्मोही।7।
जगदम्बा जगदीशं, मंगल रूप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं, भक्ति मुक्ति भंडारी।8।
सुरनर मुनिजन ध्यावैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजैं आदि गणेशा।9।
इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावैं।
समर्थ जीवन जी का, मन इच्छा फल पावैं।10।
तेतीस कोटि आधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरैं भवजल पारा, कट है यम की फांसी।11।

॥ मन्त्र ॥

अनाहद मंत्र, सुख सलाहद मंत्र, अजोख मंत्र।
बेसुन्न मंत्र, निर्बाण मंत्र थीर है।1।

आदि मंत्र, युगादि मंत्र, अचल अभंगी मंत्र।
सदा सत्संगी मंत्र, ल्यौलीन मंत्र, गहर गंभीर है।2।
सोहं सुभान मंत्र, अगम अनुराग मंत्र, निर्भय अडोल मंत्र।
निर्गुण निर्बंध मंत्र, निश्चल मंत्र नेक है।3।
गैबी गुलजार मंत्र, निर्भय निराधार मंत्र, सुमरत सुकृत मंत्र। अगमी अबंच मंत्र, अदली मंत्र अलेख है।4।
फजलं फराक मंत्र, बिन रसना गुनलाप मंत्र, झिलमिल जहूर मंत्र। सरबंग भरपूर मंत्र, सैलान मंत्र सार है।5।
ररंकार गरक मंत्र, तेजपुंज परख मंत्र, अदली अबंध मंत्र अजपा निरसंध मंत्र, अबिगत अनाहद मंत्र दिल में दीदार है।6।
बाणी विनोद मंत्र, आनंद असोध मंत्र, खुरसी करार मंत्र।
अनभय उच्चार मंत्र, उजवल मंत्र अलेख है।7।
साहिब सतराम मंत्र, सांईं निहकाम मंत्र, पारख प्रकास मंत्र।
हिरंबर हुलास मंत्र, मौले मलार मंत्र, पलक बीच खलक है।8।

॥ अथ गुरुदेव का अंग ॥

गरीब, प्रपट्टन वह परलोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत से उतरे, पाया हम दीदार।1।

गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलल पंख की जात।
काया माया ना वहाँ, नहीं पाँच तत्व का गात।2।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, उज्ज्वल हिरंबर आदि।
भलका ज्ञान कमान का, घालत है सर साधि।3।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुन्न विदेशी आप।
रोम रोम प्रकाश है, दीन्हा अजपा जाप।4।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मगन किये मुसताक।
प्याला प्याया प्रेम का, गगन मंडल गरगाप।5।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैन।
उर अंतर प्रकाशिया, अजब सुनाये बैन।6।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैल।
बजर पौलि पट खोल कर, ले गया झीनी गैल।7।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के तीर।
सब संतन सिरताज है, सतगुरु अदली कबीर।8।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के मांहि।
शब्द स्वरूपी अंग है, पिंड प्राण बिन छांहि।9।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, गलताना गुलजार।

वार पार कीमत नहीं, नहीं हलका नहीं भार।10।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के मंझ।
अंड्यौं आनंद पोष है, बैन सुनाये कुंज।11।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
पीतांबर ताखी धर्‌यो, बाणी शब्द रिसाल।12।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
गमन किया परलोक से, अलल पंख की चाल।13।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के नाल।
ज्ञान योग और भक्ति सब, दीन्हीं नजर निहाल।14।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बेपरवाह अबंध।
परमहंस पूर्ण पुरुष, रोम रोम रवि चन्द।15।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिन्दा जगदीश।
सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकट है शीश।16।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, मधुरे बैन बिनोद।
चार बेद षट् शास्त्र, कह अठारह बोध।17।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, अचल विहंगम चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान शब्द सर घाल।18।

गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तुरिया केरे तीर।
भगल बिद्या बाणी कहै, छानै नीर अरु क्षीर।19।
गरीब, जिन्दा योगी जगतगुरु, मालिक मुर्शिद पीव।
काल कर्म लागै नहीं, नहीं शंका नहीं सीव।20।
गरीब, जिन्दा योगी जगतगुरु, मालिक मुर्शिद पीर।
दोहूँ दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।21।
गरीब, जिन्दा योगी जगतगुरु, मालिक मुर्शिद पीर।
मार्या भलका भेद से, लगे ज्ञान के तीर।22।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज का अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, नर रूप सेत रंग।23।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज की लोय।
तन मन अरपौं शीश कूँ, होनी होय सो होय।24।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर किवार।
अगम द्वीप कूँ ले गया, जहां ब्रह्म दरबार।25।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बजर कपाट।
अगम भूमि कूँ गम करी, उतरे औघट घाट।26।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मारी ग्यासी गैन।

रोम रोम में सालती, पलक नहीं है चैन।27।
गरीब, सतगुरु भलका खैंच कर, लाया बाण जु एक।
श्वांस उभारे सालता, पड़्या कलेजे छेक।28।
गरीब, सतगुरु मार्‌या बान कस, खैबर ग्यासी खैंच।
भ्रम कर्म सब जर गये, लई कुबुद्धि सब ऐंच।29।
गरीब, सतगुरु आये दया करी, ऐसे दीन दयाल।
बंदी छोड़ बिरद तास का, जठर अग्नि प्रितपाल।30।
गरीब, जठर अग्नि से राखिया, प्याया अमृत क्षीर।
युगन युगन सत्संग है, समझ कुटन बेपीर।31।
गरीब, जूनी संकट मेट है, औंधे मुख नहीं आय।
ऐसा सतगुरु सेईये, जम से लेत छुड़ाय।32।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, धर्मराय के दूत।
चौदह कोटि न चंपहीं, सुन सतगुरु की कूत।33।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, धर्मराय धरै धीर।
ऐसा सतगुरु एक है, अदली असल कबीर।34।
गरीब, जम जौरा जासें डरैं, मिटे कर्म के अंक।
कागज कीरै दरगह दई, चौदह कोटि न चंप।35।

गरीब, जम जौरा जासें डरैं, मिटें कर्म के लेख।
अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।36।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, पौंहच्या मंझ निदान।
नौका नाम चढ़ाय कर, पार किये प्रवान।37।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भवसागर के माहीं।
नौका नाम चढ़ाय कर, ले राखे निज ठाहीं।38।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भवसागर के बीच।
खेवट सब कूँ खेवता, क्या उत्तम क्या नीच।39।
गरीब, चौरासी की धार में, बहे जात हैं जीव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ले परसाया पीव।40।
गरीब, लख चौरासी धार में, बहे जात हैं हंस।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलख लखाया बंस।41।
गरीब, माया का रस पीय कर, फूट गये दो नैन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, वास दिया सुख चैन।42।
गरीब, माया का रस पीय कर, हो गये डामा डोल।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान योग दिया खोल।43।
गरीब, माया का रस पीय कर, हो गए भूत खईस।

ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भक्ति दई बख्शीश।44।
गरीब, माया का रस पीय कर, फूट गये पट चार।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, लोयन संख उघार।45।
गरीब, माया का रस पीय कर, डूब गये दोऊ दीन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान योग प्रवीन।46।
गरीब, माया का रस पीय कर, गये षट् दल गारत गोर।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, प्रगट लिये बहोर।47।
गरीब, सतगुरु कूँ क्या दीजिये, देने कूँ कुछ नाहीं।
सम्मन कूँ साटा किया, सेऊ भेंट चढ़ाहीं।48।
गरीब, सिर साटे की भक्ति है, और कछु नहीं बात।
सिर के साटे पाईये, अविगत अलख अनाथ।49।
गरीब, शीश तुम्हारा जाएगा, कर सतगुरु कूँ दान।
मेरी मेरा छोड़ दे, यौं ही गोय मैदान।50।
गरीब, शीश तुम्हारा जाएगा, कर सतगुरु की भेंट।
नाम निरंतर लीजिये, जम की लगै न फेंट।51।
गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अंग एक हैं, गति कुछ अगम अगाध।52।

गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये संत।
धर धर भेष विशाल अंग, खेलैं आदि रु अंत।53।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, बेग उतारै पार।
चौरासी भ्रम मेट हीं, आवा गवन निवार।54।
गरीब, अंधे गूंगे गुरु घनें, लंगड़े लोभी लाख।
साहिब से परिचय नहीं, काब्य बनावैं साख।55।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द समाना होय।
भवसागर में डूबतें, पार लंघावै सोय।56।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, सोहं सिन्धु मिलाप।
तुरिया मध्य आसन करै, मेटै तीनों ताप।57।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का देश।
ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द विज्ञाना नेश।58।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का धाम।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस करै निःकाम।59।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का लोक।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस पठावै मोख।60।
गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पारब्रह्म का द्वीप।

ऐसा सतगुरु सेईये, राखै संग समीप।61।
गरीब, गगन मंडल गादी जहां, पारब्रह्म अस्थान।
सुन्न शिखर के महल में, हंस करैं विश्राम।62।
गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, या में मीन न मेख।63।
गरीब, सतगुरु आदि अनादि है, सतगुरु मध्य है मूल।
सतगुरु कूँ सिजदा करो, एक पलक नहीं भूल।64।
गरीब, पट्टन घाट लखाईया, अगम भूमि का भेद।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कमल दल छेद।65।
गरीब, पट्टन घाट लखाईया, अगम भूमि का भेव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कमल दल सेव।66।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया मोहि।
सिर साटे सौदा हुआ, अगली पिछली खोहि।67।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया साथ।
जहाँ हीरे मानिक बिकैं, पारस लाग्या हाथ।68।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, है सतगुरु की हाट।
जहाँ हीरे मानिक बिकैं, सौदागर स्यूं साट।69।

गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सौदा है निज सार।
हम कूँ सतगुरु ले गया, औघट घाट उतार।70।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, प्रेम प्याले खूब।
जहाँ हम सतगुरु ले गया, मतवाला महबूब।71।
गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, मतवाले मस्तान।
हम कूँ सतगुरु ले गया, अमरा पुर अस्थान।72।
गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
मानसरोवर हंस हैं, बाणी कोकिल कीर।73।
गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
जहाँ हम सतगुरु ले गया, चुवै अमीरस क्षीर।74।
गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
जहाँ हम सतगुरु ले गया, बंदी छोड़ कबीर।75।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया, सौदा रोकम रोक।76।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस तोल।
ऐसा सतगुरु मिल गया, बज्र पौलि दई खोल।77।
गरीब, भँवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस जोख।

ऐसा सतगुरु मिल गया, ले गया हम परलोक।78।
गरीब, पिंड ब्रह्मंड से अगम है, न्यारी सिन्धु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया, देख्या अगम अगाध।79।
गरीब, पिंड ब्रह्मंड से अगम है, न्यारी सिन्धु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया, दिया अक्षय प्रसाद।80।
गरीब, औघट घाटी उतरे, सतगुरु के उपदेश।
पूर्ण पद प्रकाशिया, ज्ञान योग प्रवेश।81।
गरीब, सुन्न सरोवर हंस मन, न्हाया सतगुरु भेद।
सुरति निरति परचा भया, अष्ट कमल दल छेद।82।
गरीब, सुन्न बेसुन्न से अगम है, पिंड बह्मंड से न्यार।
शब्द समाना शब्द में, अबिगत वार न पार।83।
गरीब, सतगुरु कूँ कुर्बान जां, अजब लखाया देश।
पारब्रह्म प्रवान है, निरालंब निज नेश।84।
गरीब, सतगुरु सोहं नाम दे, गुज बीरज बिस्तार।
बिन सोहं सीझै नहीं, मूल मंत्र निज सार।85।
गरीब, सोहं सोहं धुन लगै, दर्दबंद दिल माहीं।
सतगुरु पर्दा खोल हीं, परालोक ले जाहीं।86।

गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होइ धुंनि।
चढ़े महल सुख सेज पर, जहाँ पाप नहीं पुंन।87।
गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होइ धुंनि।
सतगुरु दीप समीप है, नहीं बसती नहीं सुन्न।88।
गरीब, सुन्न बसती से रहित है, मूल मंत्र मन माहीं।
जहाँ हम सतगुरु ले गया, अगम भूमि सत ठाहीं।89।
गरीब, मूल मंत्र निज नाम है, सुरति सिन्धु के तीर।
गैबी बाणी अर्श में, सुर नर धरैं न धीर।90।
गरीब, अजब नगर में ले गया, हम कूँ सतगुरु आन।
झलकैं बिंब अगाध गति, सूते चादर तान।91।
गरीब, अगम अनाहद द्वीप है, अगम अनाहद लोक।
अगम अनाहद गवन है, अगम अनाहद मोख।92।
गरीब, सतगुरु पारस रूप है, हमरी लोहा जात।
पलक बीच कंचन करैं, पलटैं पिंड रु गात।93।
गरीब, हम तो लोहा कठिन हैं, सतगुरु बने लुहार।
युगन युगन के मोरचे, तोड़ घड़े घनसार।94।
गरीब, हम पशुवा जन जीव हैं, सतगुरु जाति भिरंग।

मुर्दे से जिन्दा करैं, पलट धरत हैं अंग।95।
गरीब, सतगुरु सिकलीगर बने, यौह तन तेगा देह।
युगन युगन के मोरचे, खोवैं भ्रम संदेह।96।
गरीब, सतगुरु कंद कपूर है, हमरी तुनका देह।
स्वाती सीप का मेल है, चन्द चकोरा नेह।97।
गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, बेग उद्धारै हंस।
भवसागर आवै नहीं, जौरा काल विध्वंस।98।
गरीब, पट्टन नगरी घर करै, गगन मंडल गैनार।
अलल पंख ज्यूं संचरै, सतगुरु अधम उद्धार।99।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहै थीर।
दास गरीब उद्धारिया, सतगुरु मिले कबीर।100।

(साहेब कबीर की वाणी गुरूदेव के अंग से)

कबीर, दण्डवत् गोविन्द गुरु, बन्दू अविजन सोय।
पहले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगै होय।1।
कबीर, गुरु को कीजे दण्डवत्, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट न जानै भृंग को, यों गुरु करै है आप समान।2।
कबीर, गुरु गोविंद कर जानिये, रहिये शब्द समाय।

मिलै तो दण्डवत् बन्दगी, नहीं पल पल ध्यान लगाय।3।
कबीर, गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूँ पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दिया मिलाय।4।
कबीर, सतगुरु के उपदेश का, सुनिया एक विचार।
जे सतगुरु मिलता नहीं, जाता यम के द्वार।5।
कबीर, यम द्वार में दूत सब, करते खैंचातानी।
उनते कबहू न छूटता, फिरता चारों खानी।6।
कबीर, चार खानी में भ्रमता, कबहूं न लगता पार।
सो फेरा सब मिट गया, मेरे सतगुरु के उपकार।7।
कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूँ, लेखनि करूँ बनराय।
धरती का कागज करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।8।
कबीर, बलिहारी गुरु आपना, घड़ी घड़ी सौ-सौ बार।
मानुष से देवता किया, करत न लागी बार।9।
कबीर, गुरु को मानुष जो गिनै, चरणामृत को पान।
ते नर नरकै जाएँगे, जन्म जन्म होवें श्वान।10।
कबीर, गुरु मानुष कर जानते, ते नर कहियें अंध।
होवें दुखी संसार में, आगै यम के फंद।11।

कबीर, ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि के रूठे ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर।12।
कबीर, कबीरा हरि के रूठतें, गुरु के शरणै जाय।
कहै कबीर गुरु रूठतें, हरि नहीं होत सहाय।13।
कबीर, गुरु से ज्ञान जो लीजिये, शीश दीजिये दान।
बहुतक भौंदू बह गये, राख जीव अभिमान।14।
कबीर, गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्हीं दान।15।
कबीर, तन मन दिया तो भला किया, सिर का जासी भार।
जो कबहू कहै मैं दिया, बहुत सहे सिर मार।16।
कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार।
हरि सुमरे सो वार हैं, गुरु सुमरे होय पार।17।
कबीर, ये तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।18।
कबीर, सात द्वीप नौ खण्ड में, गुरु से बड़ा ना कोय।
कर्ता करे ना कर सकै, गुरु करे सो होय।19।
कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा, तिन्हूँ भी गुरु कीन्ह।

तीन लोक के वे धनी, गुरु आगै आधीन।20।
कबीर, हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।
तासु पटन्तर ना तुलै, संतन किया विवेक।21।

॥ सतगुरु महिमा ॥

(साहेब गरीबदास जी की वाणी)

सतगुरु दाता है कलि माहीं, प्राण उद्धारन उतरे साईं।
सतगुरु दाता दीन दयालं, जम किंकर के तोड़ै जालं।
सतगुरु दाता दया कराहीं, अगम द्वीप से सो चल आहीं।
सतगुरु बिना पंथ नहीं पावै, सतगुरु मिले तो अलख लखावै।
सतगुरु साहिब एक शरीरा, सतगुरु बिना न लागै तीरा।
सतगुरु बाण विहंगम मारै, सतगुरु भवसागर से तारै।
सतगुरु बिना न पावै पैंडा, हूंठ हाथ गढ़ लीजै कैंडा।
सतगुरु दर्दबंद दरवेशा, जो मन कर है दूर अंदेशा।
सतगुरु दर्दबंद दरबारी, उतरे साहिब सुन्न आधारी।
सतगुरु साहिब अंग न दूजा, ये सर्गुण वे निर्गुण पूजा।
गरीब, निर्गुण सर्गुण एक है, दूजा भ्रम विकार।
निर्गुण साहिब आप है, सर्गुण संत विचार।

सतगुरु बिना सुरति नही पाटै, खेल मंड्या है सिर के साटै।
सतगुरु भक्ति मुक्ति के दानी, सतगुरु बिना न छूटै खानी।
मार्ग बिना चलन है तेरा, सतगुरु मेटै तिमर अंधेरा।
अपने प्राण दान जो करहीं, तन मन धन सब अर्पण धरहीं।
सतगुरु संख कला दरशावै, सतगुरु अर्श विमान बिठावै।
सतगुरु भवसागर के कोली, सतगुरु पार निबाहै डोली।
सतगुरु मादर पिदर हमारे, भवसागर के तारनहारे।
सतगुरु सुन्दर रूप अपारा, सतगुरु तीन लोक से न्यारा।
सतगुरु परम पदार्थ पूरा, सतगुरु बिना न बाजै तूरा।
सतगुरु आवादान कर देवैं, सतगुरु राम रसायन भेवैं।
सतगुरु पशु मानुष कर डारैं, सिद्धि देय कर ब्रह्म विचारैं।
गरीब, ब्रह्म बिनानी होत है, सतगुरु शरणा लीन।
सूभर सोई जानिये, सब सेती आधीन।
सतगुरु जो चाहे सो करहीं, चौदह कोटि दूत यम डरहीं।
ऊत भूत जम त्रास निवारै, चित्रगुप्त के कागज पारै।

(साहेब कबीर जी की वाणी)

गुरु ते अधिक न कोई ठहरायी। मोक्ष पंथ नहीं गुरु बिन पाई।

राम कृष्ण बड़ तिहुँपुर राजा।तिन गुरु बंद कीन्ह निज काजा।
गेही भक्ति सतगुरु की करही। आदि नाम निज हृदय धरही।
गुरु चरणन से ध्यान लगावै। अंत कपट गुरु से ना लावै।
गुरु सेवा में फल सर्बस आवै। गुरु विमुख नर पार न पावै।
गुरु वचन निश्चय कर मानै। पूरे गुरु की सेवा ठानै।
गुरु की शरणा लीजै भाई। जाते जीव नरक नहीं जाई।
गुरु कृपा कटे यम फांसी। विलम्ब न होय मिले अविनाशी।
गुरु बिन काहु न पाया ज्ञाना। ज्यों थोथा भुस छड़े किसाना।
तीर्थ व्रत अरू सब पूजा। गुरु बिन दाता और न दूजा।
नौ नाथ चौरासी सिद्धा। गुरु के चरण सेवे गोविन्दा।
गुरु बिन प्रेत जन्म सब पावै। वर्ष सहंस्र गर्भ सो रहावै।
गुरु बिन दान पुण्य जो करई। मिथ्या होय कबहूँ नहीं फलही।
गुरु बिन भ्रम न छूटे भाई। कोटि उपाय करे चतुराई।
गुरु के मिले कटे दु:ख पापा। जन्म जन्म के मिटें संतापा।
गुरु के चरण सदा चित्त दीजै। जीवन जन्म सफल कर लीजै।
गुरु भगता मम् आत्म सोई। वाके हृदय रहूँ समोई।
अड़सठ तीर्थ भ्रम भ्रम आवे। सो फल गुरु के चरनों पावे।

दशवाँ अंश गुरु को दीजै। जीवन जन्म सफल कर लीजै।
गुरु बिन होम यज्ञ नहीं कीजे। गुरु की आज्ञा माहीं रहीजे।
गुरु सुर तरु सुर धेनु समाना। पावै चरन मुक्ति प्रवाना।
तन मन धन अरप गुरु सेवै। होय गलतान उपदेशहिं लेवै।
सतगुरु की गति हृदय धारे। और सकल बकवाद निवारै।
गुरु के सन्मुख वचन न कहै। सो शिष्य रहनि गहनि सुख लहै।
गुरु से शिष्य करै चतुराई। सेवाहीन नरक में जाई।
रमैनी : शिष्य होय सरबस नहीं वारै। हिये कपट मुख प्रीति उचारै।
जो जीव कैसे लोक सिधाई। बिन गुरु मिले मोहे नहीं पाई।
गुरु से करै कपट चतुराई। सो हंसा भव भ्रमें आई।
गुरु से कपट शिष्य जो राखै। यम राजा के मुगदर चाखै।
जो जन गुरु की निंदा करई। शूकर श्वान गर्भ में परई।
गुरु की निंदा सुने जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।
अपने मुख निंदा जो करई। परिवार सहित नरक में पड़ही।
गुरु को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।
गुरु से बैर करै शिष्य जोई। भजन नाश अरु बहुत बिगोई।
पीढ़ी सहित नरक में परिहै। गुरु आज्ञा शिष्य लोप जो करिहै।

चेला अथवा उपासक होई। गुरु सन्मुख ले झूठ संजोई।
निश्चय नरक परै शिष्य सोई। वेद पुराण भाषत सब कोई।
सन्मुख गुरु की आज्ञा धारै। अरू पीछे तै सकल निवारै।
सो शिष्य घोर नरक में परिहै। रुधिर राध पीवै नहीं तिरिहै।
मुख पर वचन करै प्रमाना। घर पर जाय करै विज्ञाना।
जहाँ जावै तहाँ निंदा करई। सो शिष्य क्रोध अग्नि में जरई।
ऐसे शिष्य को ठाहर नाही। गुरु विमुख लोचत है मनमाही।
बेद पुराण कहै सब साखी। साखी शब्द सबै यों भाखी।
मानुष जन्म पायकर खोवै। सतगुरु विमुखा जुग जुग रोवै।
गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर।
चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।
कबीर, जान बूझ साची तजै, करै झूठे से नेह।
जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।
तातै सतगुरु शरना लीजै। कपट भाव सब दूर करीजै।
योग यज्ञ जप दान करावै। गुरु विमुख फल कबहू न पावै।

(शिष्य की आधीनता)

दोउ कर जोड़ै गुरु के आगे। करै बहु विनती चरनन लागे।

अति शीतल बोलै सब बैना। मेटै सकल कपट के भैना।
हे गुरु तुम हो दीन दयाला। मैं हूँ दीन करो प्रतिपाला।
बंदी छोड़ मैं अतिहि अनाथा। भवजल बूड़त पकड़ो हाथा।
दीजै उपदेश गुप्त मंत्र सुनाओ। जन्म मरन भव दुःख छुड़ाओ।
यों आधीन होवै शिष्य जबही। शिष्य पर कृपा करै गुरु तबही।
गुरु से शिष्य जब दीक्षा मांगै। मन कर्म वचन धरै धन आगै।
ऐसी प्रीति देखै गुरु जबही। गुप्त मंत्र कहै गुरु तबही।
भक्ति मुक्ति को पंथ बतावै। बुरो होन को पंथ छुड़ावै।
ऐसे शिष्य उपदेश पाई। होय दिव्य दृष्टि पुरूष पै जाई।

(गुरु सेवा महात्मय)

गंगा यमुना बद्री समेते। जगन्नाथ धाम हैं जेते।
भ्रमे फल प्राप्त होय न जेतो। गुरु सेवा में पावै फल तेतो।
गुरु महातम को वार न पारा। वरणैं शिव सनकादिक और अवतारा।
गुरु को पूर्ण ब्रह्म कर जाने। और भाव कबहू नहीं आने।
जिन बातन से गुरु दुःख पावै। तिन बातन को दूर बहावै।
अष्ट अंग से दंडवत् प्रणामा। संध्या प्रातः करै निष्कामा।

(गुरु चरणामृत का महात्मय)

कोटिक तीर्थ सब कर आवै। गुरु चरणां फल तुरंत ही पावै।
चरणामृत कदाचित पावै। चौरासी कटै लोक सिधावै।
कोटिक जप तप करै करावै। वेद पुराण सबै मिल गावै।
गुरु पद रज मस्तक पर देवै। सो फल तत्कालहि लेवै।
सो गुरु सत जो सार चिनावै। यम बंधन से जीव मुक्तावै।
गुरु पद सेवे बिरला कोई। जा पर कृपा साहिब की होई।
गुरु महिमा शुकदेव जु पाई। चढ़ विमान बैकुण्ठे जाई।
गुरु बिन बेद पढ़ै जो प्राणी। समझे ना सार, रहे अज्ञानी।
सतगुरु मिले तो अगम बतावै। जम की आँच ताहि नहीं आवै।
गुरु से ही सदा हित जानो। क्यों भूले तुम चतुर स्यानो।
गुरु सीढ़ी चढ़ ऊपर जाई। सुखसागर में रहे समाई।
गौरी शंकर और गणेशा। सबही लीन्हा गुरु उपेदशा।
शिव बिंरचि गुरु सेवा कीन्हा। नारद दीक्षा ध्रू को दीन्हा।
गुरु विमुख सोई दुःख पावै। जन्म जन्म सोई डहकावै।
गुरु सेवै सो चतुर स्याना। गुरु पटतर कोई और न आना।

(साहिब कबीर के उपदेश)

कबीर, जो तोको काँटा बोवै, ताको बो तूं फूल।
तोहि फूल के फूल हैं, वाको हैं त्रिशूल।
कबीर, दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की श्वांस से, लोह भस्म हो जाय।
कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगायें सुख होत है, औरों ठगें दुःख होय।
कबीर, या दुनिया में आय के, छोड़ दे तू ऐंठ।
लेना होय सो लेइले, उठी जात है पैंठ।
कहै कबीर पुकार के, दोय बात लख लेय।
एक साहब की बंदगी, और भूखों को कछु देय।
कबीर, इष्ट मिलै और मन मिलै, मिलैं सकल रस रीति।
कहै कबीर तहाँ जाइये, रह सन्तन की प्रीति।
कबीर, ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आप भी शीतल होय।
कबीर, जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
या आपा कों डार दे, दया करैं सब कोय।

कबीर, कहते को कही जान दे, गुरु की सीख तू लेय।
साकट और श्वान को, उलट जवाब न देय।
कबीर, हस्ती चढ़िये ज्ञान के, सहज दुलीचा डार।
श्वान रूप संसार है, भूसन दे झखमार।
कबीर, कबिरा काहे को डरै, सिर पर सिरजनहार।
हस्ती चढ़ डरिये नहीं, कूकर भुसैं हजार।
कबीर, आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।
कहै कबीर नहीं उलटिये, रहै एक की एक।
कबीर, गाली ही से ऊपजै, कलह कष्ट और मीच।
हार चलै सो साधु है, लाग मरे सो नीच।
कबीर, हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरि सों मिलै, जीता यम की लार।
कबीर, जेता घट तेता मता, घट घट और स्वभाव।
जा घट हार न जीत है, ता घट ब्रह्म समाव।
कबीर, कथा करो करतार की, सुनो कथा करतार।
आन कथा सुनिये नहीं, कहै कबीर विचार।
कबीर, बन्दे तू कर बन्दगी, जो चाहै दीदार।

अवसर मानुष जन्म का, बहुर न बारम्बार।
कबीर, बनजारे के बैल ज्यों, भ्रमत फिरै बहु देश।
खांड लाद भुस खात है, बिन सतगुरु उपदेश।

॥ सुमिरन का अंग ॥

कबीर, सुमरन मार्ग सहज का, सतगुरु दिया बताय।
स्वाँस-उस्वाँस जो सुमरता, एक दिन मिलसी आय।
कबीर, माला स्वाँस-उस्वाँस की, फेरेंगे निज दास।
चौरासी भ्रमै नहीं, कटै कर्म की फाँस।
कबीर, सुमरन सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंत मध्य सोधिया, दूजा देखा ख्याल।
कबीर, निज सुख आत्म राम है, दूजा दुःख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीरा सुमरन सार।
कबीर, दुःख में सुमरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जे सुख में सुमरन करै, तो दुःख काहे को होय।
कबीर, सुख में सुमरन ना किया, दुःख में किया याद।
कहै कबीर ता दास की, कौन सुनै फरियाद।
कबीर, साँई यों मत जानियों, प्रीति घटै मम चित्त।

मरूं तो तुम सुमरत मरूं, जीवत सुमरूँ नित्य।
कबीर, जप तप संयम साधना, सब सुमरन के माही।
कबीरा जानें रामजन, सुमरन सम कछु नाही।
कबीर, जिन हरि जैसा सुमरिया, ताको तैसा लाभ।
ओसां प्यास न भागहीं, जब लग धसै न आब।
कबीर, सुमिरन की सुध यों करो, जैसे दाम कंगाल।
कहै कबीर बिसरै नहीं, पल पल लेत संभाल।
कबीर, सुमिरन सों मन लाइये, जैसे पानी मीन।
प्राण तजै पल बिछुड़े, सत्य कबीर कह दीन।
कबीर, सत्यनाम सुमर ले, प्राण जाएँगे छूट।
घर के प्यारे आदमी, चलतें लेंगे लूट।
कबीर, लूट सकै तो लूट ले, राम नाम है लूट।
पीछै फिर पछताएगा, प्राण जाएँगे छूट।
कबीर, सोया तो निष्फल गया, जाग्या सो फल लेय।
साहिब हक्क न राखसी, जब माँगै तब देय।
कबीर, चिंता तो हरि नाम की, और न चितवै दास।
जो कछु चितवे नाम बिना, सोई काल की फाँस।

कबीर, जबही सत्यनाम हृदय धर्‌यो,भयो पाप को नाश।
मानों चिनगी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।
कबीर, राम नाम को सुमिरतां, अधम तिरे अपार।
अजामेल गणिका सुपच, सदना सिबरी नार।
कबीर, स्वप्नहि में बर्‌ड़ाय के, जो कोई कहे राम।
वाके पग की पाँवड़ी, मेरे तन को चाम।
कबीर, नाम जपत कन्या भली, साकट भला न पूत।
छेरी के गल गलथना, जामें दूध न मूत।
कबीर, सब जग निर्धना, धनवंता नहीं कोय।
धनवंता सोई जानिये, राम नाम धन होय।
कबीर, कहता हूँ कहि जात हूँ, कहूँ बजाकर ढोल।
श्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।
कबीर, ऐसे मंहगे मोल का, एक श्वाँस जो जाय।
चौदह लोक नहीं पटतरे, काहे धूर मिलाय।
कबीर, जीवन तो थोड़ा ही भला, जे सत्य सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरै न कोय।
कबीर, कहता हूँ कहि जात हूँ, सुनता है सब कोय।

सुमरन सों भला होयगा, नातर भला न होय।
कबीर, कबीरा हरि की भक्ति बिन, धिग जीवन संसार।
धूंआ जैसा धौलहरा, जात न लागै बार।
कबीर, भक्ति भाव भादों नदी, सबै चली घहराय।
सरिता सोई जानिये, जो ज्येष्ठ मास ठहराय।
कबीर, भक्ति बीज बिनसै नहीं, आय पड़ैं सौ झोल।
जे कंचन विष्टा पड़ै, घटै न ताका मोल।
कबीर, कामी क्रोधी लालची, इन पै भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई शूरमां, जाति बरण कुल खोय।
कबीर, जब लग भक्ति सहकामना, तब लग निष्फल सेव।
कहै कबीर वह क्यों मिलै, निष्कामी निज देव।

॥ अथ सातों वार की रमैणी ॥

सातों बार समूल बखानों। पहर घड़ी पल ज्योतिष जानों।1।
ऐतबार अंतर नहीं कोई। लगी चांचरी पद में सोई।2।
सोम संभाल करो दिन राती। दूर करो नैं दिल की कांती।3।
मंगल मन की माला फेरो। चौदह कोटि जीत यम जेरो।4।
बुध बिनांनी विद्या दीजै। सत सुकृत निज सुमरण कीजै।5।

बृहस्पति अभ्यास भये बैरागा। तातें मन राते अनुरागा।6।
शुक्र शाला कर्म बताया। जद मन मानसरोवर नहाया।7।
शनिश्चर श्वासा माहीं समोया। जब हम मक्रतार मग जोया।8।
राहु केतु रोके नहीं घाटा। सतगुरु खोल्हे बजर कपाटा।9।
नौ ग्रह नमन करै निर्बाणा। अबिगत नाम निरालंब जाना।10।
नौ ग्रह नाद समोये नासा। सहंस कमल दल कीन्हा बासा।11।
दिशासूल दहों दिश का खोया। निरालंब निर्भय पद जोया।12।
कठिन विषम गति रहनि हमारी। कोई न जानत है नर नारी।13।
चंद्र समूल चिंतामणि पाया। गरीबदास पद पदह समाया।14।

॥ अथ सर्व लक्षणा ग्रन्थ ॥

उत्तम कुल करतार दे, द्वादश भूषण संग।
रूप द्रव्य दे दया कर, ज्ञान भजन सत्संग।1।
शील संतोष विवेक दे, क्षमा दया इकतार।
भाव भक्ति वैराग दे, नाम निरालम्ब सार।2।
योग युक्ति स्वारथ्य जगदीश दे, सूक्ष्म ध्यान दयाल।
अकल यकीन अजन्म जति, अष्ट सिद्धि नौ निधि ख्याल।3।
स्वर्ग नरक बांचै नहीं, मोक्ष बंधन से दूर।

बड़ी गरीबी जगत में, संत चरण रज धूर।4।
जीवत मुक्ता सो कहौ, आशा तृष्णा खण्ड।
मन के जीते जीत है, क्यों भ्रमैं ब्रह्मण्ड।5।
शाला कर्म शरीर में, सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान पद, नहीं आवै नहीं जाय।6।
चौरासी की चाल क्या, मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत हैं, जाके मौंहडे खेह।7।
काम क्रोध मद लोभ लट, छूटि रहे विकराल।
क्रोध कसाई उर बसै, कुशब्द छुरा घर घाल।8।
हर्ष शोक हैं श्वान गति, संशय सर्प शरीर।
राग द्वेष बड़े रोग हैं, यम की पड़ै जंजीर।9।
आशा तृष्णा नदी में, डूबे तीनूं लोक।
मनसा माया विस्तरी, आत्म आत्म दोष।10।
एक शत्रु एक मित्र है, भूल पड़ी रे प्राण।
यम की नगरी जाएगा, शब्द हमारा मान।11।
निंदा बिंदा छोड़ दे, संतों से कर प्रीत।
भवसागर तिर जात है, जीवत मुक्त अतीत।12।
जे तेरे उपजे नहीं, तो शब्द साखी सुन लेह।

साक्षीभूत संगीत है, जासे लावो नेह।13।
स्वर्ग सात आसमान पर, भटकत है मन मूढ़।
खालिक तो खोया नहीं, इसी महल में ढूंढ़।14।
कर्म भ्रम भारी लगें, संशय सूल बबूल।
डाली पानौं डोलते, परसत नाहीं मूल।15।
श्वासा ही में सार पद, पद में श्वासा सार।
दम देही का खोज कर, आवागवन निवार।16।
बिन सतगुरु पावै नहीं, खालिक खोज विचार।
चौरासी जग जात है, चीन्हत नाहीं सार।17।
मर्द गर्द में मिल गये, रावण से रणधीर।
कंस केशी चाणूर से, हिरणाकुश बलबीर।18।
तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत।
गरीबदास हरि नाम बिन, खाली परसी खेत।19।

॥ अथ ब्रह्म बेदी ॥

ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनं।
ब्रह्म ज्ञानी महा ध्यानी, सत सुकृत दुःख भंजनं।1।
मूल चक्र गणेश वासा, रक्त वर्ण जहां जानिये।

किलियं जाप कुलीन तज सब, शब्द हमारा मानिये।2।
स्वाद चक्र ब्रह्मादि वासा, जहां सावित्री ब्रह्मा रहैं।
ॐ जाप जपंत हंसा, ज्ञान योग सतगुरु कहैं।3।
नाभि कमल में विष्णु विश्वंभर, जहां लक्ष्मी संग वास है।
हरियं जाप जपंत हंसा, जानत बिरला दास है।4।
हृदय कमल महादेव देवं, सती पार्वती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा, ज्ञान योग भल रंग है।5।
कंठ कमल में बसै अविद्या, ज्ञान ध्यान बुद्धि नास हीं।
लील चक्र मध्य काल कर्मम्, आवत दम कूँ फांस हीं।6।
त्रिकुटी कमल परम हंस पूर्ण, सतगुरु समर्थ आप है।
मन पौना सम सिंध मेलो, सुरति निरति का जाप है।7।
सहंस कमल दल भी आप साहिब, ज्यौं फूलन मध्य गंध है।
पूर रह्या जगदीश योगी, सत्य समर्थ निर्बन्ध है।8।
मीनी खोज हनोज हरदम, उलट पंथ की बाट है। इंगला
पिंगुला सुष्मण खोजो, चल हंसा औघट घाट है।9।
ऐसा योग वियोग वरणौं, जो शंकर ने चित्त धर्या।
कुम्भक रेचक द्वादश पलटे, काल कर्म तिस तैं डर्या।10।
सुन्न सिंहासन अमर आसन, अलख पुरुष निर्बाण है।

अति ल्यौलीन बेदीन मालिक, कादिर कूँ कुर्बान है।11।
है निरसिंध अबंध अबिगत, कोटि वुैकण्ठ नख रूप है।
अपरम्पार दीदार दर्शन, ऐसा अजब अनूप है।12।
घुरैं निशान अखण्ड धुंनि सुन, सोहं वेदी गाईये।
बाजैं नाद अगाध अग हैं, जहां ले मन ठहराइये।13।
सुरति निरति मन पवन पलटै, बंकनाल सम कीजिए।
सर्व फूल असूल अस्थिर, अमी महारस पीजिए।14।
सप्तपुरी मेरूदण्ड खोजो, मन मनसा गह राखिये।
उड़हैं भँवर आकाश गमनं, पांच पचीसौं नाखिये।15।
गगन मण्डल की सैल कर ले, बहुर न ऐसा दाव है।
चल हंसा प्रलोक पठाऊँ, भवसागर नहीं आव है।16।
कन्द्रप जीत उदीत योगी, षट कर्मी यौह खेल है।
अनभय मालिन हार गूंदै, सुरति निरति का मेल है।17।
सोहं जाप अजाप थरपो, त्रिकुटी संगम धुंनि लगै।
मान सरोवर न्हान हंसा, गंग सहंस मुख जित बगै।18।
कालंद्री कुर्बान कादिर, अबिगत मूरति खूब है।
छत्र श्वेत विशाल लोचन, गलताना महबूब है।19।
दिल अन्दर दीदार दर्शन, बाहर अन्त न जाइये।

काया माया कहां बपुरी, तन मन शीश चढ़ाईये।20।
अबिगत आदि युगादि योगी, सत पुरुष ल्यौलीन है।
गगन मंडल गलतान गैबी, जात अजात बेदीन है।21।
सुख सागर रत्नागर निर्भय, निज मुख बाणी गावहीं।
झिन आकर अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवहीं।22।
झिलमिल नूर जहूर ज्योति, कोटि पदम उजियार है।
उल्ट नैन बेसुन्न बिस्तर, जहां तहां दीदार है।23।
अष्ट कमल दल सकल रमता, त्रिकुटी कमल मध्य निरख हीं।
श्वेत ध्वजा सुन्न गुमट आगै, पंच रंग झण्डे फरक हीं।24।
सुन्न मंडल सतलोक चलिये, नौ दर मूंद बेसुन्न है।
दिव्य चिसम्यौं एक बिम्ब देख्या, निज श्रवण सुनि धुंनि है।25।
चरण कमल में हंस रहते, बहुरंगी बरियाम है।
सूक्ष्म मूर्ति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम है।26।
नौ स्वर बन्ध निशंक खेलो, दसवें दर मुख मूल है।
माली न कूप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।27।
स्वांस उस्वांस पवन कूँ पलटै, नाग फुनी कूँ भूंच है।
सुरति निरति का बांध बेड़ा, गगन मण्डल कूँ कूँच है।28।
सुन ले योग वियोग हंसा, शब्द महल कूँ सिद्ध करो।

यौह गुरुज्ञान विज्ञान बाणी, जीवत ही जग में मरो।29।
उज्ज्वल हिरंबर श्वेत भौरा, अक्षय वृक्ष सत्य बाग है।
जीतो काल विशाल सोहं, तरतीबर वैराग है।30।
मनसा नारी कर पनिहारी, खाखी मन जहां मालिया।
कुभंक काया बाग लगाया, फूले हैं फूल विशालिया।31।
कच्छ मच्छ कूरम्भ धौलं, शेष संहस फुनि गाव हीं।
नारद मुनि से रटैं निश दिन, ब्रह्मा पार न पाव हीं।32।
शम्भु योग वियोग साध्या, अचल अडिग समाध है।
अबिगत की गति नहीं जानी, लीला अगम अगाध है।33।
सनकादिक और सिद्ध चौरासी, ध्यान धरत हैं तास का।
चौबीसौं अवतार जपत हैं, परमहंस प्रकाश का।34।
सहंस अठासी और तेतीसौं, सूरज चन्द चिराग हैं।
धर अम्बर धरनी धर रटते, अबिगत अचल विहाग हैं।35।
सुर नर मुनि जन सिद्ध और साधक, पार ब्रह्म कूँ रटत हैं।
घर घर मंगलाचार चौरी, ज्ञान योग जहां बटत हैं।36।
चित्र गुप्त धर्मराय गावैं, आदि माया ओंकार है।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, ऐसा पार ब्रह्म दरबार है।37।
कामधेनु कल्पवृक्ष जाकै, इन्द्र अनन्त सुर भरत हैं।

पार्वती कर जोर लक्ष्मी, सावित्री शोभा करत हैं।38।
गंधर्व ज्ञानी और मुनि ध्यानी, पांचौं तत्व ख्वास हैं।
त्रिगुण तीन बहुरंग बाजी, कोई जन बिरले दास हैं।39।
ध्रुव प्रह्लाद अगाध अग हैं, जनक विदेही जोर है।
चले विमान निदान बीत्या, धर्मराय की बंध तौर है।40।
गोरख दत्त युगादि योगी, नाम जलंधर लीजिये।
भरथरी गोपी चन्द सीझे, ऐसी दीक्षा दीजिए।41।
सुलतानी बाजीद फरीदा, पीपा परचे पाईया।
देवल फेरया गोप गोसाईं, नामा की छान छिवाईया।42।
छान छिवाई गऊ जिवाई, गनिका चढ़ी विमान में।
सदना बकरे कूँ मत मारै, पहुँचे आन निदान में।43।
अजामेल से अधम उद्धारे, पतित पावन बिरद तास है।
केशो आन भया बनजारा, षट दल कीन्ही हांस है।44।
धन्ना भक्त का खेत निपाया, माधो दई सिकलात है।
पंडा पांव बुझाया सतगुरु, जगन्नाथ की बात है।45।
भक्ति हेत केशो बनजारा, संग रैदास कमाल थे।
हे हर हे हर होती आई, गूंन छई और पाल थे।46।
गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर है।

भक्ति हेत आन काया धर आये, अबिगत सत कबीर है।47।
नानक दादू अगम अगाधू, तेरी जहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।48।
कोटि भानु प्रकाश पूर्ण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी है सत्संगी, अबिगत का दीदार है।49।
धन्य सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेट हीं।
तेज पुंज आन देह धर कर, इस विधि हम कूँ भेंट हीं।50।
शब्द निवास आकाश वाणी, यौह सतगुरु का रूप है।
चन्द सूरज नहीं पवन ना पानी, ना जहां छाया धूप है।51।
रहता रमता राम साहिब, अबिगत अलह अलेख है।
भूले पंथ विटंब वादी, कुल का खाविंद एक है।52।
रूंम रूंम में जाप जप ले, अष्ट कमल दल मेल है।
सुरति निरति कूँ कमल पठवो, जहां दीपक बिन तेल है।53।
हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवैणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।54।

।। सत साहेब।।

असुर निकंदन रमैणी

सतगुरूदेव की जय
बन्दी छोड़ कबीर साहेब जी की जय
बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज जी की जय
स्वामी रामदेवानंद महाराज जी की जय
बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल महाराज जी की जय
सर्व संतों की जय, सर्व भक्तों की जय

॥ अथ मंगलाचरण ॥

गरीब नमो-नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरवस दीन्हीं।1।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुर्बान।2।
नराकार निर्बिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निर्गुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुंनं।3।
सोहं सुरति समाप्तं, सकल समाना निरति लै।
उज्ज्वल हिरंबर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।4।

गरीब, जो सुमरत सिद्धि होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।5।
आदि गणेश मनाऊँ, गणनायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यौ लाऊँ, आदि अंत कर हूँ सेवा।6।
परम शक्ति संगीतं, रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अबिगत गुणह अतीतं, सत्यपुरुष निर्मोही।7।
जगदम्बा जगदीशं, मंगल रूप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं, भक्ति मुक्ति भंडारी।8।
सुरनर मुनिजन ध्यावैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजैं आदि गणेशा।9।
इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावैं।
समर्थ जीवन जी का, मन इच्छा फल पावैं।10।
तेतीस कोटि आधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरैं भवजल पारा, कट है यम की फांसी।11।

॥ रमैणी ॥

सत पुरुष समर्थ ॐकारा। अदली पुरुष कबीर हमारा।1।
आदि युगादि दया के सागर। काल कर्म के मोचन आगर।2।

दुःख भंजन दरवेश दयाला। असुर निकंदन करै पैमाला।3।
आब खाक पावक और पौना। गगन सुन्न दरियाई दौंना।4।
धर्मराय दरबानी चेरा। सुर असुरौं का करै नबेरा।5।
सत का राज धर्मराय करहीं। अपना किया सबही डंड भरहीं।6।
शंकर शेष रु ब्रह्मा बिष्णुं। नारद शारद जा उर रसनं।7।
गौरिज और गणेश गौसांईं। कारज सकल सिद्ध होय जाहीं।8।
ब्रह्मा विष्णु रु शंभु शेषा। तीन्यू देव दयालु हमेशा।9।
सावित्री और लक्ष्मी गौरा। तिहूँ देवा सिर कर हैं चौंवरा।10।
पांच तत्व आरंभन कीन्हा। तीन गुणन मध्य शाखा झीना।11।
सतपुरुष से ॐकारा। अविगत रूप रचे गैनारा।12।
कच्छ मच्छ कूरंभ और धौला। सिरजन हार पुरुष है मौला।13।
लख चौरासी साज बनाया। भगलीगर कूँ भगल उपाया।14।
उपजैं बिनसैं आवैं जांहीं। मूल बीज कूँ संसा नांही।15।
नील नाभ से ब्रह्मा आये। आदि ॐ के पुत्र कहाये।16।
शंभू मनू ब्रह्मा की शाखा। ऋग युज साम अथर्व भाषा।17।
पीबरत भया उतानं पाता। जाके ध्रू हैं आत्म ज्ञाता।18।
सनक, सनंदन, सनातन, संत कुमारा। च्यार पुत्र अनुरागी धारा।19।
तेतीस कोटि कला बिसतारी। सहंस अठासी मुनिजन धारी।20।

कश्यप पुत्र सूरज सुर ज्ञानी। तीन लोक में किरण समानी।21।
साठ हजार संगी बाल्यखेलं। बीना रागी अजब बलेलं।22।
तीन कोटि योद्धा संग जाके। सिक बंधी है पूर्ण साके।23।
हाथ खड्ग गले पुष्प की माला। कश्यप सुत है रूप बिशाला।24।
कौस्तभ मणि जड़्या विमान तुम्हारा। सुरनर मुनिजन करत जुहारा।25।
चंद सूर चकवै पृथ्वी मांहीं। निश वासर चरणौं चित्त लाहीं।26।
पीठै सूरज सनमुख चन्दा। काटैं त्रिलोकी के फंधा।27।
तारायन सब स्वर्ग समूलं। पखे रहैं सतगुरु के फूलं।28।
जै जै ब्रह्मा समर्थ स्वामी। येती कला परम पद धामी।29।
जै जै शंभु शंकर नाथा। कला गणेश अरु गौरिज माता।30।
कोटि कटक पैमाल करंता। ऐसे समर्थ शंभु कंता।31।
चंद लिलाट सूर संगीता। योगी शंकर ध्यान उदीता।32।
नील कण्ठ सोहे गरूड़ आसन। शंभु योगी अचल सिंहासन।33।
गंग तरंग छूटैं बहु धारा। अजपा तारी जय-जय कारा।34।
रिद्धि सिद्धि दाता शंभु गोसांई। दारिद्र मोक्ष सबै होय जांहीं।35।
आसन पदम लगाये योगी। निःइच्छा निर्बाणी भोगी।36।
सर्प भुजंग गले रुंड माला। बृषभ चढ़िये दीन दयाला।37।
वामें कर त्रिशूल विराजै। दहनें कर सुदर्शन साजै।38।

सुन अरदास देवन के देवा। शंभु योगी अलख अभेवा।39।
तूं पैमाल करै पल मांही। ऐसे समर्थ शंभु सांई।40।
इक लख योजन ध्वजा फरकैं। पचरंग झंडे मौहरे रखैं।41।
काल भद्र कृत देव बुलाऊँ। शंकर के दल सब हीं ध्याऊँ।42।
भैरव खेत्रपाल पलीतं। भूत अरु दैत्य चढ़े संगीतं।43।
राक्षस भंजन विरद तुम्हारा। ज्यौं लंका पर पदम अठारा।44।
कोट्यौं गंधर्व कमंद चढ़ावैं। शंकर दल गिनती नहीं आवैं।45।
मारैं हाक दहाक चिंघारैं। अग्नि चक्र बांनों तन जारैं।46।
कंप्या शेष धरणि थर्रानी। जा दिन लंका घाली घानी।47।
तुम शंभू ईशन के ईशा। वृषभ चढ़िये बिसवे बीसा।48।
इन्द्र कुबेर और वरुण बुलाऊँ। रापति सेत सिंहासन ल्याऊँ।49।
इन्द्र दल बादल दरियाई। छ्यानवै कोटि की हुई चढ़ाई।50।
सुरपति चढ़े इन्द्र अनुरागी। अनंत पदम गंधर्व बड़ भागी।51।
कृष्ण भंडारी चढ़े कुबेरा। अब दिल्ली मंडल बौहर्यौं फेरा।52।
बरूण विनोद चढ़े ब्रह्मज्ञानी। कला संपूर्ण बारह बाणी।53।
धर्मराय आदि युगादि चेरा। चौदह कोटि कटक दल तेरा।54।
चित्र-गुप्त के कागज मांही। जेता उपज्या सतगुरु सांई।55।
सातौं लोक पाल का रासा। उर में धरिये साधु दासा।56।

विष्णु नाथ है असुर निकंदन। संतों के सब काटै फंधन।57।
नरसिंह रूप धरे घुर्राया। हिरनांकुस कूँ मारन धाया।58।
शंख चक्र गदा पदम बिराजै। भाल तिलक जाकै उर साजै।59।
बांहन गरुड़ कृष्ण असवारा। लक्ष्मी ढोरै चंवर अपारा।60।
रावण अहीरावण से मारे। सेतु बांध सैंना दल त्यारे।61।
जरासिंघ और बालि खपाये। कंस केसी चांनौर हराये।62।
कालीदह में नागी नाथा। शिशुपाल चक्र से काट्या माथा।63।
कालयवन मथुरा पर धाये।अठारह कोटि कटक चढ आये।64।
मुचकंद पर पीतांबर डार्या। कालयवन जहां बेग संहारा।65।
परशुराम बावन अवतारा। कोई न जानैं भेव तुम्हारा।66।
संखासुर मारे निर्बाणी। बाराह रूप धरे प्रवानी।67।
राम औतार रावण की बेरा। हनुमंत हांका सुनी सुमेरा।68।
आदि मूल बेद ॐकारा। असुर निकंदन कीन सिंघारा।69।
वासिष्ठ विश्वामित्र आये। दुर्वासा और चुणक बुलाये।70।
कपल कलंद्र कीन जुहारा। फौज नकीब सभन सिरदारा।71।
गोरख दत्त दिगंबर बाला। हनुमंत अंगद रूप विशाला।72।
ध्रू प्रह्लाद और जनक विदेही। सुखदेव संगी परम स्नेही।73।
पारासुर और ब्यास बुलाये। नल नील मौहरे चढ़ धाये।74।

सुग्रीव संग और लछमन बाला। जोड़ घटा आये घन काला।75।
जैदे पायल जंग बजाये। अजामेल और हरिश्चंद्र आये।76।
ताम्रध्वज मोरध्वज राजा। अबंरीश कर है पूर्ण काजा।77।
सूरज वंशी पांचौं पांडौं। काल मीच सिर देवैं डांडौं।78।
धर्म युधिष्ठिर धरै ध्याना। अर्जुन लख संहानी बाणा।79।
सहदे, भीम, नकुल और कौंता। द्रौपदी जंग का दीन्हा न्यौता।80।
हाथ खप्पर और मस्तक बिंदा। अठारह अक्षौणी मेली द्वंद्वा।81।
देवी शिव शिव करैं संहारैं। खड्ग बांन चकरौं से मारैं।82।
चौंसठ योगनि बावन बीरा। भक्षण बदन करैं ततबीरा।83।
असुर कटक धुम्र उड़ जांई। सुरौं रक्षा करै गोसांई।84।
पचरंग झंडे लंब लहरिया। दक्खन के दल उत्तर उतरिया।85।
पचरंग झंडे लंब चलाये। दक्खन के दल उत्तर धाये।86।
मौहरै हनुमंत गोरख बाला। हरि के हेत हरौल हमाला।87।
चिंहडोल चुणक दुर्वासा देवा। असुर निकंदन बूड़त खेवा।88।
बलि अरु शेष पतालौं साखा। सनक सनंदन स्वर्गै हाका।89।
दौंह दिश बाजू ध्रूप्रह्लादा। कोटि कटक दल कट्या पयादा।90।
बज्रबाण की बोऊँ बाड़ी। सतगुरु संत जीत हैं राड़ी।91।
जे कोई मानै शब्द हमारा। राज करै काबुल कंधारा।92।

अरब खरब मक्के कूँ धाऊँ। मदीनां बांध हद में ल्याऊँ।93।
ईरां तुरां कहां शिकारी। गढ़ गजनी लग होवै असवारी।94।
दिल्ली मंडल पाप की भूमां। धरती नाल जगाऊँ सूमां।95।
हस्ती घोरा कटक सिंहारौं। दृष्टि पड़ै असुरां दल मारौं।96।
शंख पंचायन नादू टेरं। स्वर्ग पातालं हाक सुमेरं।97।
बाल्मीक सुर बाचा बंधा। पंडौं यज्ञ द्वापर की संधा।98।
नारद कुंभक ऋषि कुर्बाना। मारकंडे रूंमी ऋषि आना।99।
इन्द्र ऋषि बक्तालब स्वामी। और संत साधु घण नामी।100।
नाथ जलंधर और अजयपाला। गुरु मछंदर गोरख बाला।101।
भरथरी गोपीचंदा योगी। सुलतान अधम है सब रस भोगी।102।
नरहरि दास पखै बलि भीष्म। ब्यास बचन प्रमानी सीखम।103।
नामा और रैदास रसीला। कोई न जानैं अबिगत लीला।104।
पीपा धन्ना चढ़े बाजीदा। सेऊ सम्मन और फरीदा।105।
दादू नानक नाद बजाये। मलूक दास तुलसी चढ आये।106।
कमाल मल और सूर ज्ञानी। रामानंद के हैं फुरमानी।107।
मीरांबाई और कमाली। भीलनी नाचै दे दे ताली।108।
नासकेतु नकीब हमारा। उधालक मुनि करत जुहारा।109।
साहिब तख्त कबीर ख्वासा। दिल्ली मंडल लीजै बासा।110।

सतगुरु दिल्ली मंडल आयसी। सूती धरनी सुंम जगायसी।111। काग भुशंड छत्र कै आगै। गंधर्व करत चलत हैं रागै।112। येता गुप्तार रासा पढ़ैगा सो चढ़ैगा। चंपैगा पर भूमि सीम।113। साक्षी कृष्ण पांचौं पंड़ौं, भारती भीम।114। द्रौपदी के खप्पर में मेदिनी समायसी। चौंसठ जोगनि मंगल गायसी।115। बजरबान का ताला राक्षस सिर ठोकसी। दक्खन के दल दीप उतर कूँ झोकसी।116। दिल्ली मंडल राज त्रिकुटी कूँ साधसी। याह लीला प्रवान, जो सतगुरु कूँ आराधसी।117। कजली बन के कुंजर, ज्यौं गोफिन के गिलोल हैं। राक्षस का रासा भंग, खाली चहंडोल हैं।118। निहकलंक अंस लीला कालंदर कूँ मारसी। अर्ध लाख बरष बाकी, दानें और दूतौं कूँ संहारसी।119। कलयुग की आदि में चानौर कंस मारे थे, त्रेता की आदि में हिरण्यकुश पछारे थे।120। बलि की बिलास यज्ञ, सुरपति पुकारे थे। बावन स्वरूप धर, सुनी सुरपति पुकार, बलि बैन निसतारे थे।121। कलयुग की आदि बारा सदी की अंत है, दूलह दयाल देव जांनत कोई

संत भेव। यौही बाला कंत है।122। दिल्ली के तख्त छत्र फेर भी फिरायसी। खेलत गुपतार सैंन, भंजन सब फोकट फैन। महियल राज बाल पुरुष, सतगुरु दिखलायसी।123। आवैगा दक्खन से दिवाना। काबुल का काल किल किलियं, गल है तुर्काना।124। किलि किलियं, अवतार कला। जीतन जंग जूझमला। ऐसा पुरुष आया, कहता है गरीबदास। दिल्ली मंडल होय बिलास, निहकलंक राया।125।

॥ रक्षा मंत्र ॥

सतगुरु शरण शरणाई, शरण गहे कछु भय नहीं व्यापै, काल जाल भय मिट जाई। रोग शोग छल छिद्र नहीं व्यापै, सन्मुख ना ठहराई। जहर अग्नि तन निकट नहीं आवै, दूर जात रेंगाई। बीर बेताल बाण ना लागै, जम के कोट ढहाई। अठानवे पुनः मूठ ना लागैं, उल्ट ताही धर खाई। बैर करे सोए दुःख पावै, सुरति शब्द मिल जाई। कह कबीर हम जम दल पेल्या, सतगुरु लाख दुहाई।

॥ सत साहेब ॥

संध्या आरती

सतगुरूदेव की जय
बन्दी छोड़ कबीर साहेब जी की जय
बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज जी की जय
स्वामी रामदेवानंद महाराज जी की जय
बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल महाराज जी की जय
सर्व संतों की जय, सर्व भक्तों की जय

॥ अथ मंगलाचरण ॥

गरीब नमो-नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरवस दीन्हीं।1।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुर्बान।2।
नराकार निर्बिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निर्गुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुंनं।3।
सोहं सुरति समाप्तं, सकल समाना निरति लै।
उज्ज्वल हिरंबर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।4।

गरीब, जो सुमरत सिद्धि होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।5।
आदि गणेश मनाऊँ, गणनायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यौ लाऊँ, आदि अंत कर हूँ सेवा।6।
परम शक्ति संगीतं, रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अबिगत गुणह अतीतं, सत्यपुरुष निर्मोही।7।
जगदम्बा जगदीशं, मंगल रूप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं, भक्ति मुक्ति भंडारी।8।
सुरनर मुनिजन ध्यावैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजैं आदि गणेशा।9।
इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावैं।
समर्थ जीवन जी का, मन इच्छा फल पावैं।10।
तेतीस कोटि आधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरैं भवजल पारा, कट है यम की फांसी।11।

आरती (1)

पहली आरती हरि दरबारे, तेजपुंज जहां प्राण उधारे।1।
पाती पंच पौहप करैं पूजा, देव निंरजन और न दूजा।2।

खण्ड खण्ड में आरती गाजै, सकलमयी हरि जोति विराजै ।3 ।
शान्ति सरोवर मंजन कीजै, जत की धोति तन पर लीजै ।4 ।
ज्ञान अंगोछा मैल न राखै, धर्म जनेऊ सतमुख भाषै ।5 ।
दया भाव तिलक मस्तक दीजै, प्रेम भक्ति का अचमन लीजै ।6 ।
जो नर ऐसी कार कमावै, कंठी माला सहज समावे ।7 ।
गायत्री सो जो गिनती खोवै, तर्पण सो जो तमक न होवै ।8 ।
संध्या सो जो सन्धि पिछानै, मन पसरे कुं घट में आनै ।9 ।
सो संध्या हमरे मन मानी, कहैं कबीर सुनो रे ज्ञानी ।10 ।

(2)

ऐसी आरती त्रिभुवन तारे, तेजपुंज जहां प्राण उद्धारे ।1 ।
पाती पंच पौहप करैं पूजा, देव निरंजन और न दूजा ।2 ।
अनहद नाद पिण्ड ब्रह्मण्डा, बाजत अहर निश सदा अखण्डा ।3 ।
गगन थाल जहां उड़गन मोती, चंद सूर जहां निर्मल ज्योति ।4 ।
तनमन धन सब अर्पण कीन्हा, परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा ।5 ।
प्रेम प्रकाश भया उजियारा, कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा ।6 ।

(3)

संध्या आरती करो विचारी, काल दूत जम रहैं झख मारी ।1 ।
लाग्या सुषमण कूंची तारा, अनहद शब्द उठै झनकारा ।2 ।

उनमुनि संयम अगम घर जाई, अछै कमल में रहया समाई।3।
त्रिकुटी संजम कर ले दर्शन, देखत निरखत मन होय प्रसन्न।4।
प्रेम मगन होय आरती गावैं, कहैं कबीर भौजल बहुर न आवैं।5।

(4)

हरि दर्जी का मर्म न पाया, जिन यौह चोला अजब बनाया।1।
पानी की सुई पवन का धागा, नौ दस मास सीमते लागा।2।
पांच तत्त की गुदरी बनाई, चन्द सूर दो थिगरी लगाई।3।
कोटि जतन कर मुकुट बनाया, बिच बिच हीरा लाल लगाया।4।
आपै सीवैं आपे बनावैं, प्राण पुरूष कुं ले पहरावै।5।
कहै कबीर सोई जन मेरा, नीर खीर का करै निबेरा।6।

(5)

राम निरंजन आरती तेरी, अबिगत गति कुछ समझ पड़े नहीं, क्यूं पहुंचे मति मेरी।1।
नराकार निर्लेप निरंजन, गुणह अतीत तिहूं देवा।
ज्ञान ध्यान से रहैं निराला, जानी जाय न सेवा।2।
सनक सनंदन नारद मुनिजन, शेष पार नहीं पावै।
शंकर ध्यान धरैं निश वासर, अजहूं ताहि सुलझावै।3।
सब सुमरैं अपने अनुमाना, तो गति लखी न जाई।

कहैं कबीर कृपा कर जन पर, ज्यों है त्यों समझाई ।4 ।

(6)

नूर की आरती नूर के छाजै, नूर के ताल पखावज बाजै ।1 ।
नूर के गायन नूर कुं गावैं, नूर के सुनते बहुर न आवै ।2 ।
नूर की बाणी बोलै नूरा, झिलमिल नूर रहा भरपूरा ।3 ।
नूर कबीरा नूर ही भावै, नूर के कहे परम पद पावै ।4 ।

(7)

तेज की आरती तेज के आगै, तेज का भोग तेज कुं लागै ।1 ।
तेज पखावज तेज बजावै, तेज ही नाचै तेज ही गावै ।2 ।
तेज का थाल तेज की बाती, तेज का पुष्प तेज की पाती ।3 ।
तेज के आगै तेज विराजै, तेज कबीरा आरती साजै ।4 ।

(8)

आपै आरती आपै साजै, आपै किंगर आपै बाजै ।1 ।
आपै ताल झांझ झनकारा, आप नाचै आप देखन हारा ।2 ।
आपै दीपक आपै बाती, आपै पुष्प आप ही पाती ।3 ।
कहैं कबीर ऐसी आरती गाऊँ, आपा मध्य आप समाऊँ ।4 ।

(9)

अदली आरती अदल समोई । निर्भय पद में मिलना होई ।1 ।

दिल का दीप पवन की बाती। चित का चंदन पांचों पाती ।2।
तत का तिलक ध्यान की धोती। मन की माला अजपा जोती ।3।
नूर के दीप नूर के चंवरा। नूर के पौहप नूर के भंवरा ।4।
नूर की झांझ नूर की झालर। नूर के संख नूर की टालर ।5।
नूर की सौंज नूर की सेवा। नूर के सेवक नूर के देवा ।6।
आदि पुरुष अदली अनुरागी। सुन्न संपट में सेवा लागी ।7।
खोजो कमल सुरति की डोरी। अगर द्वीप में खेलौ होरी ।8।
निर्भय पद में निरति समानी। दास गरीब दर्श दरबानी ।9।

(10)

अदली आरती अदल उच्चारा। सतपुरुष दीजो दीदारा ।1।
कैसे कर छूटै चौरासी। जूनी संकट बहुत त्रासी ।2।
युगन युगन हम कहते आये। भौसागर से जीव छुटाये ।3।
कर विश्वास श्वास कूँ पेखौ। या तन में मन मूर्ति देखो ।4।
श्वासा पारस भेद हमारा। जो खोजै सो उतरै पारा ।5।
श्वासा पारस आदि निशानी। जो खोजै सो होय दरबानी ।6।
हरदम नाम सुहंगम सोई। आवागवन बहुर नहीं होई ।7।
अब तो चढ़ो नाम के छाजै। गगन मंडल में नौबत बाजै ।8।

अगर अलील शब्द सहदानी। दास गरीब विहंगम बाणी ।9।

(11)

अदली आरती असल बखाना। कोली बुनै विहंगम तांना ।1।
ज्ञान का राछ ध्यान की तुरिया। नाम का धागा निश्चय जुरिया ।2।
प्रेम की पान कमल की खाडी। सुरति का सूत बुनै निज गाढी ।3।
नूर की नाल फिरै दिन राती। जा कोली कूँ काल न खाती ।4।
कुल का खूंटा धरनी गाड्या। गहर गजीना ताना गाढा ।5।
निरति की नली बुनै जे कोई। सो तो कोली अविचल होई ।6।
रेजा राजिक का बुन दीजै। ऐसै सतगुरु साहिब रीझै ।7।
दास गरीब सोई सत कोली। ताना बुन है अर्श अमोली ।8।

(12)

अदली आरती असल अजूनी। नाम बिना है काया सूंनी ।1।
झूठी काया खाल लुहारा। इला पिंगुला सुषमन द्वारा ।2।
कृतघ्नी भूले नर लोई। जा घट निश्चय नाम न होई ।3।
सो नर कीट पतंग भवंगा। चौरासी में धर हैं अंगा ।4 ।
उदबुद खानी भुगतैं प्रानी। समझैं नहीं शब्द सहदानी ।5।
हम हैं शब्द शब्द हम मांहीं। हम से भिन्न और कुछ नांहीं ।6।
पाप पुण्य दो बीज बनाया। शब्द भेद किन्हे बिरले पाया ।7।

शब्दै सर्व लोक में गाजै। शब्द वजीर शब्द है राजै।8।
शब्दै स्थावर जंगम योगी। दास गरीब शब्द रस भोगी।9।

(13)

अदली आरती असल जमाना। जम जौरा मेटौं तलबाना।1।
धर्मराय पर हमरी धाई। नौबत नाम चढो ले भाई।2।
चित्र-गुप्त के कागज कीरौं। युगन युगन मेटौं तकसीरौं।3।
अदली ज्ञान अदल एक रासा। सुन कर हंस न पावै त्रासा।4।
अजराईल जोरावर दाना। धर्मराय का है तलबाना।5।
मेटौं तलब करौं तागीरा। भेटे दास गरीब कबीरा।6।

(14)

अदली आरती असल पठाऊँ। युगन युगन का लेखा ल्याऊँ।1।
जा दिन ना थे पिंड न प्राणा। नहीं पानी पवन जमीं आसमाना।2।
कच्छ मच्छ कूरंभ न काया। चंद सूर नहीं दीप बनाया।3।
शेष महेश गणेश विष्णु न ब्रह्मा। नारद शारद नहीं विश्वकर्मा।4।
सिद्ध चौरासी ना तेतीसौं। नौ औतार नहीं चौबीसौं।5।
पांच तत्व नहीं गुण तीनां। नाद बिंद नांहीं घट सीनां।6।
चित्र, गुप्त नहीं कृत्रम बाजी। धर्मराय नहीं पंडित काजी।7।
धूंधूंकार अनंत युग बीते। जा दिन कागज कहो किन्ह चीते।8।

जा दिन थे हम तख्त ख्वासा। तन के पाजी सेवक दासा।9।
संख युगन प्रलय प्रवाना। सतपुरुष के संग रहाना।10।
दास गरीब कबीर का चेरा। सत्यलोक अमरापुर डेरा।11।

(15)

ऐसी आरती पारख लीजे। तन मन धन सब अर्पण कीजै।1।
जाकै नौलख कुंज देवालय भारी। गोवर्धन से अनंत अपारी।2।
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं। अनहद नाद अमर पुर छाजैं।3।
सुन्न मंडल सतलोक निदाना। अगम दीप देख्या अस्थाना।4।
अगर दीप में ध्यान समोई। झिलमिल झिलमिल झिलमिल होई।5।
तातें खोजो काया काशी। दास गरीब मिले अबिनाशी।6।

(16)

ऐसी आरती अपरम्पारा। थाके ब्रह्मा बेद उच्चारा।1।
अनंत कोटि जाकै शंभू ध्यानी। विष्णु ब्रह्मा संख बेद पढैं बांनी।2।
इन्द्र अनंत मेघ रस माला। शब्द अतीत बिरध नहीं बाला।3।
चंद सूर जाकै अनंत चिरागा। शब्द अतीत अजब रंग बागा।4।
सात समुंद्र जाकै अंजन नैना। शब्द अतीत अजब रंग बैना।5।
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं। पूर्ण ब्रह्म अमरपुर छाजैं।6।
तीस कोटि रामा औतारी। सीता संग रहंती नारी।7।

तीन पदम जाकै भगवाना। सप्त नील कन्हवा संग जान्या।8।
तीस कोटि सीता संग चेरी। सप्त नील राधा दे फेरी।9।
जाकै अर्ध रूंम पर सकल पसारा। ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।10।
दास गरीब कहै नर लोई। यौह पद चीन्हैं बिरला कोई।11।
गरीब, सतवादी सब संत हैं, अपने अपने धाम।
आजिज की अरदास है, सब संतन प्रणाम।12।

(आरती के साथ लगातार करनी है)

गुरु ज्ञान अमांन अडोल अबोल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, आन अस्थान रोप्या छुड़ानी।
दीनन के जी दयाल, भक्ति विरद दीजिये।
खाने जाद गुलाम, अपना कर लिजिये।टेक।
खाने जाद गुलाम, तुम्हारा हूँ सही।
मेहरबान महबूब, युगन युग पत रही।1।
बांदी का जाम गुलाम, गुलाम गुलाम हूँ।
खड़ा रहूँ दरबार सु, आठौं याम हूँ।2।
सेवक तलबदार, दर तुम्हारे कूक हीं।
औगुन अनंत अपार, पड़ी मोहि चूक हीं।3।

मैं घर का बांदीजादा, अर्ज मेरी मानिये।
जन कहता दास गरीब, अपना कर जानिये।4।

॥ साखी ॥

गरीब, जल थल साक्षी एक है, डूंगर डहर दयाल।
दशौं दिशा कूँ दर्शनं, ना कहीं जौरा काल।1।
गरीब, जै जै जै करुणामई, जै जै जै जगदीश।
जै जै जै तूं जगतगुरु, पूर्ण बिसवे बीस।2।
राग रूप रघुवीर है, मोहन जाका नाम।
मुरली मधुर बजावहीं, गरीबदास बलिजांव।3।
गरीब, बांदी जाम गुलाम की, सुन ले अर्ज आवाज।
यौह पाजी संग लीजिये, जब लग तुम्हरा राज।4।
गरीब, प्रलय कोटि अनंत हैं, धरनी अंबर धौल।
मैं दरबारी दर खड़ा, अचल तुम्हारी पौल।5।
गरीब, समर्थ तूं जगदीश है, सतगुरु साहिब सार।
मैं शरणागत आईया, तुम हो अधम उद्धार।6।
गरीब, संतों की फुलमाल है, वरनौं वित अनुमान।
मैं सबहन का दास हूँ, करो बंदगी दान।7।

गरीब, अर्ज अवाज अनाथ की, आजिज की अरदास।
आवन जावन मेटियो, दीज्यो निश्चल वास।8।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, चाल विहंगम बीन।
सनकादिक पलड़ै नहीं, शंकर ब्रह्मा तीन।9।
गरीब, दूजा ओपन आप की, जेते सुरनर साध।
मुनिवर सिद्ध सब देखिया, सतगुरु अगम अगाध।10।
गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, या में मीन न मेख।11।
पूर्ण ब्रह्म कृपा निदान, सुन केशव करतार।
गरीबदास मुझ दीन की, रखियो बहुत संभार।12।
गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर राखो हंस।
यम किंकर चंपैं नहीं, उद्धर जात है वंस।13।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहै थीर।
दास गरीब उद्धारिया, सतगुरु मिले कबीर।14।
शरणा पुरुष कबीर का, सब संतन की ओट।
गरीब दास रक्षा करैं, कबहु न लागै चोट।15।
गरीब, सत्यवादी के चरणों की, सिर पर डारौं धूर।

चौरासी निश्चय मिटै, पहुँचैं तख्त हजूर।16।
गरीब, शब्द स्वरूपी ऊतरे, सतगुरु सत्य कबीर।
दास गरीब दयाल हैं, डिगें बँधावैं धीर।17।
कर जोरूं विनती करूं, धरूं चरण पर शीश।
सतगुरू दास गरीब हैं, पूर्ण बिश्वे बीस।18।
नाम लिये से सब बड़े, रिंचक नहीं कसूर।
गरीब दास के चरणां की, सिर पर डारूं धूर।19।
गरीब, जिस मंडल साधु नहीं, नदी नहीं गुंजार।
तज हंसा औह देशड़ा, जम की मोटी मार।20।
गरीब, जिन मिलते सुख ऊपजै, मिटैं कोटि उपाध।
भवन चतुर्दश ढूंढ़िये, परम स्नेही साध।21।
गरीब, बंदी छोड़ दयाल जी, तुम लग हमरी दौड़।
जैसे काग जहाज का, सूझत और न ठौर।22।
गरीब, साधु माई बाप हैं, साधु भाई बन्ध।
साधु मिलावैं राम से, काटैं यम के फन्द।23।
गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर।
दास गरीब सतपुरुष भजो, अबिगत कला कबीर।24।

बिना धणी की बन्दगी, सुख नहीं तीनों लोक।
चरण कमल के ध्यान से गरीब दास संतोष।25।

॥ सत साहेब ॥

॥ शब्द ॥

तारैंगे तहतीक सतगुरु तारैंगे। टेक।
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट ही में है जगदीश।1।
तुम्हरा ही ज्ञाना तुम्हरा ही ध्याना, तुम्हरे तारन की प्रतीत।2।
मन कर धीर बांध ले रे बौरे, छोड़ दे नैं पिछल्यों की रीत।3।
दास गरीब सतगुरु का चेरा, टारैंगे यम की रसीत।4।

(2)

{आया है आया है बनजारा केशव आया है।
काशी ल्याया माल अपारा केशव आया है।
आया है आया है बनजारा केशव आया है।}
केशो आया है बनजारा, काशी ल्याया माल अपारा। टेक।
नौ लख बौडी भरी विश्वंभर, दिया कबीर भंडारा।
धरती ऊपर तंबू तानें, चौपड़ के बैजारा।1।
कौन देश तैं बालद आई, नां कहीं बंध्या निवारा।

अपरम्पार पार गति तेरी, कित उतरी जल धारा।2।
शाहूकार नहीं कोई जाकै, काशी नगर मंझारा।
दास गरीब कल्प से उतरे, आप अलख करतारा।3।

(3)

समर्थ साहिब रत्न उजागर। सतपुरुष मेरे सुख के सागर।
जूनी संकट मेट गोसांई। चरण कमल की मैं बलि जांही।
भाव भक्ति दीजो प्रवाना। साधु संगति पूर्ण पद ज्ञाना।
जन्म कर्म मेटो दुःख द्वंद्वा। सुखसागर में आनंद कन्दा।
निर्मल नूर जहूर जुहारं। चंद्रगता देखूं दीदारं।
तुम्ह हो बंकापुर के वासी। सतगुरु काटो यम की फाँसी।
मेहरबान हो साहिब मेरा। गगन मण्डल में दीजो डेरा।
चकवे चिदानंद अविनाशी। रिद्धि सिद्धि दाता सब गुण राशी।
पिण्ड प्राण जिन दिन्हें दाना। गरीबदास जा कूँ कुर्बाना।

(4)

कबीर, गुरु जी तुम ना बीसरौ, लाख लोग मिल जाहीं।
हमसे तुम कूँ बहुत हैं, तुमसे हमको नाहीं।
कबीर, तुम्हरे बिसारे क्या बनै, मैं किसके शरने जाऊँ।
शिव विरंचि मुनि नारदा, तिनके हृदय न समाऊँ।

कबीर, औगुन किया तो बहु किया, करत न मानी हार।
भावै बंदा बख्शियो, भावै गर्दन तार।
कबीर, औगुन मेरे बापजी, बख्शो गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हूँ, बहुर पिता कों लाज।
कबीर, मैं अपराधी जन्म का, नख शिख भरे बिकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार।
कबीर, अबकी जो सतगुरु मिलै, सब दुःख आँखों रोई।
चरणों ऊपर शीश धरों, कहूँ जो कहना होई।
कबीर, कबिरा सांई मिलैंगे, पूछेंगे कुशलात।
आदि अंत की सब कहूँ, अपने दिल की बात।
कबीर, अंतरयामी एक तू, आत्म के आधार।
जो तुम छोड़ो हाथ, तो कौन उतारै पार।

(5)

मेरे गुरुदेव भगवान - भगवान,
दियो काट काल की फांसी।टेक।
अवगुण किये घनेरे, फिर भी भले बुरे हम तेरे।
दास को जान कै निपट नादान - हो नादान,
मोहे बक्स दियो अविनाशी।1।

मेरै उठै उमंग सी दिल मैं, तुम्हें याद करूं पल-पल मै।
आपका ऐसा मक्खन ज्ञान - हो ज्ञान,
यो जगत बिलोवै लास्सी।2।
या दुनिया सुख से सोवै, तेरा दास उठ कै रोवै।
मेरा मेटो आवण जाण - हो जाण,
या करियो मेहर जरा सी।3।
नहीं तपत शिला पै जलना, कोय चौरासी का भय ना।
रोग कट्या सुमेर समान - हो समान,
या गई तृष्णा खाँसी।4।
तुम्हें कहां ढूँढ़ के ल्याऊँ, अब तड़फ-तड़फ रह जाऊँ।
आप गए अमर अस्थान - हो अस्थान,
दई छोड़ तड़पती दासी।5।
स्वामी रामदेवानन्द दाता, आपकी घणी सतावैं वैं बाता।
तेरा रामपाल अज्ञान - हो अज्ञान,
किया सतलोक का वासी।6।

।। सत साहेब।।

भोजन खाने से पहले बोली जाने वाली वाणी

भोजन थाली में डालने के बाद एक ग्रास रोटी तथा सब्जी आदि का कुछ अंश भी उस ग्रास पर रखकर थाली के अन्दर या किसी अन्य कटोरी में रख दें। फिर निम्न वाणी बोलकर भोजन खाना प्रारम्भ करें। भोजन करने के बाद वह अलग से रखा हुआ ग्रास जो भगवान को भोग लगाया था, उसे यह कहकर खाएँ कि ''हे प्रभु! आपका बचा-खुचा भोजन आप के दास को मिलता रहे, आप हमारे सर्व दुःखों का निवारण करें।''

गरीब, सुख देना दुःख मेटना, ताजा राखे तन।
सुर तेतीसों खुश किए नमस्कार तोहे अन्न।1।
अन्न जल साहिब रूप है, क्षुध्या तृषा जाए।
चारों युग प्रवान हैं, आत्म भोग लगाए।2।
जो अपने सो और के, एकै पीड़ पिछान।

भुखियां भोजन देत हैं, पहुँचेगें प्रवान।3।
अन्न देव तुं अलख दयालं, तेरे पलड़ै तुलै न लाल।
अन्न देव तुं जगमग ज्योति, तेरे पलड़ै तुलै न मोति।4।
वैरागर किस काम न आवै, अन्न देव तूं सब मन भावै।
वैरागर है पत्थर भारी, अन्न देव तूं आप मुरारी।5।
खुध्या तृषा मेटैं पीड़ा, तेरै पलड़ै तुलै न हीरा।
दास गरीब ये अन्न की महिमा,
तीन लोक में जाका रहिमा।6।

भोजन खाने के बाद बोली जाने वाली वाणी

पाया प्रसाद मन भया थीर,
रक्षा करैं सतगुरु रूप में सत कबीर।

॥ अन्नदेव की छोटी आरती ॥

आरती अन्न देव तुम्हारी। जासे काया पलै हमारी।
रोटी आदि रू रोटी अन्त। रोटी ही कूँ गावैं संत।1।
रोटी मध्य सिद्ध सब साध। रोटी देवा अगम अगाध।

रोटी ही के बाजैं तूर। रोटी अनंत लोक भरपूर।2।
रोटी ही के राटारंभ। रोटी ही के हैं रण खंभ।
रावण मांगन गया चून। तातें लंक भई बेरूंन।3।
मांडी बाजी खेले जूवा। रोटी ही पर कैरों पांडौं मूवा।
रोटी पूजा आत्मदेव। रोटी ही परमात्म सेव।4।
रोटी ही के हैं सब रंग। रोटी बिना न जीतै जंग।
रोटी मांगी गोरखनाथ। रोटी बिना न चलै जमात।5।
रोटी कृष्ण देव हो पाई। सहंस अठासी की क्षुधा मिटाई।
तंदुल बिप्र कूँ दिये देख। रची सुदामा पुरी अलेख।6।
आधीन विदुर घर भोजन पाई। कैरों बूड़े मान बड़ाई।
मान बड़ाई से हैं दूर। आजिज के हरि सदा हजूर।7।
बूक बाकले दिये विचार। भये चकवे कई एक बार।
बीट्ठल हो कर रोटी पाई। नाम देव की कला बधाई।8।
धन्ना भगत कूँ दिया बीज। जाका खेत निपाया रीझ।
द्रुपद सुता कूँ दीया लीर। जाके अनंत बधाये चीर।9।
रोटी चार भार्या घाली। नरसीला की हुण्डी झाली।
सांवल शाह सदा का सही। जाकी हुंडी तत्त पर लई।10।

जड़ कूँ दूध पिलाया जान। पूजा खाय गये पाषाण।
बलि कूँ यज्ञ रची अश्वमेध। बावन होकर आये उमेद।11।
तीन पैड़ जगह दिया दान। बावन कूँ बलि छले निदान।
नित बुन कपड़ा देते भाई। जाकै नौ लख बालद आई।12।
अबिगत केशव नाम कबीर। तातें टूटैं जम जंजीर।
रोटी तैमूरलंग कूँ दीन्हीं। तातें सात पादशाही लीन्हीं।13।
रोटी ही के राज रू पाट। रोटी ही के हैं गज ठाठ।
रोटी माता रोटी पिता। रोटी काटै क्षुधा बिथा।14।
दास गरीब कहै दरवेशा। रोटी बांटो सदा हमेशा।15।
गरीब, बुढ़िया और बाजीद जी, सुनही के आनंद।
रोटी चारौं मुक्ति हैं, कटैं गले के फंद।

एक दाने का निकास, सहंस्र दानों का प्रकाश।
जिस भण्डारे से अन्न निकसा,
सो भण्डारा भरपूर, काल कंटक दूर।
सती अन्नदेव संतोषी पावै,
जाकी वासना तीन लोक में समावै॥

पाठ प्रकाश के समय विनती

सतगुरूदेव की जय
बन्दी छोड़ कबीर साहेब जी की जय
बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज जी की जय
स्वामी रामदेवानंद महाराज जी की जय
बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल महाराज जी की जय
सर्व संतों की जय, सर्व भक्तों की जय

॥ अथ मंगलाचरण ॥

गरीब नमो-नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतों सरवस दीन्हीं।1।
सतगुरु साहिब संत सब, दण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुये, तिन कूँ जां कुर्बान।2।
नराकार निर्बिषं, काल जाल भय भंजनं।
निरलेपं निज निर्गुणं, अकल अनूप बेसुन्न धुंनं।3।
सोहं सुरति समाप्तं, सकल समाना निरति लै।
उज्ज्वल हिरंबर हरदमं, बेपरवाह अथाह है, वार पार नहीं मध्यतं।4।

गरीब, जो सुमरत सिद्धि होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।5।
आदि गणेश मनाऊँ, गणनायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यौ लाऊँ, आदि अंत कर हूँ सेवा।6।
परम शक्ति संगीतं, रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अबिगत गुणह अतीतं, सत्यपुरुष निर्मोही।7।
जगदम्बा जगदीशं, मंगल रूप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं, भक्ति मुक्ति भंडारी।8।
सुरनर मुनिजन ध्यावैं, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजैं आदि गणेशा।9।
इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावैं।
समर्थ जीवन जी का, मन इच्छा फल पावैं।10।
तेतीस कोटि आधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरैं भवजल पारा, कट है यम की फांसी।11।

हम विनती करते जी, गुरु जी तेरे आगै, साहिब तेरे आगै।टेक।
गरीब, साहिब मेरी बीनती, सुनो गरीब निवाज।

जल की बूंद महल रच्या, भला बनाया साज।1।
गरीब, साहिब मेरी बीनती, सुनो अर्ज आवाज।
मादर पिदर करीम तूं, पुत्र पिता कूँ लाज।2।
गरीब, साहिब मेरी बीनती, कर जोड़ूँ करतार।
तन मन धन कुर्बान जां, दीजै मोहे दीदार।3।
मालिक मीरा मेहरबान, सुनियों अर्ज अवाज।
पंजा राखो शीश पर, यम नहीं देत त्रास।4।
मीरा मोपै मेहर कर, मैं आया तक श्याम।
समर्थ तुमरे आसरै, बांदी जाम गुलाम।5।
गरीब, मैं समर्थ के आसरे, दम कदम करतार।
गफलत मेरी दूर कर, खड़ा रहूँ दरबार।6।
गरीब, अविनाशी तेरे आसरै, अचराचर की श्याम।
अर्थ धर्म काम मोक्ष होहिं, हे कबीर समर्थ राम।7।
गरीब, अर्ज अवाज अनाथ की, आजिज की अरदास।
आवन जावन मेटियो, दीज्यो निश्चल वास।8।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।9।

गरीब, युगन युगन के पाप सब, युगन युगन के मैल।
जानत है जगदीश तूं, जोर किये बदफैल।10।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहै थीर।
दास गरीब उद्धारिया, सतगुरु मिले कबीर।11।
अकाल पुरुष साहिब धनी, अबिगत अविनाशी।
गरीबदास शरणै लग्या, काटो यम फांसी।12।

॥ शब्द (बधाई) ॥

हमारै हुआ पाठ प्रकाश बधाई मैं बाँटूंगी।
हमारै आये साहिब कबीर बधाई मैं बाँटूंगी।
हमारै आए गरीब दास बधाई मैं बाँटूंगी।टेक।
अमर लोक से चलकर आए, भव बंधन से जीव छुड़ाए।
दे मन्त्र (नाम) सत्यलोक पठाए, ये देते निश्चल बास।1।
पाप पुण्य को हरदम तोलूं, घर-घर में मैं कहती डोलूं।
दुश्मन-मीत सभी से बोलूं, तुम करियो आवण की ख्यास।2।
म्हारै भक्त महात्मा आवैंगे, वो गुण साहिब के गावैंगे।
हमारे भ्रम भूत मिट जावैंगे, फिर होवै नाम विश्वास।3।

नगर निवासी सब ही आना, आपस के मतभेद भुलाना।
कोए दिन में सब को चले जाना, या झूठी जग की आश।4।
दुःख मेटै और सुख का दाता, पूर्ण ब्रह्म है आप विधाता।
जब चाहे चोला धर आता, हुआ सुल्तानी कै खवास।5।
काशी में केशव बण आया, सम्मन के घर भोग लगाया।
सेऊ धड़ पर शीश चढ़ाया, यह काटैं कर्म की फांस।6।
जिस घर का यह होता पाठ जी, उन भक्तों के होते ठाठ जी।
भक्ति बिहुने बारह बाट जी, जिनको लगी ना भजन की प्यास।7।
गुरु राम देवानन्द गुण गाता है, दास रामपाल को समझाता है।
भजन बिना नहीं सुख पाता है, चाहे पृथ्वीपति हो खास।8।

।।सत साहेब ।।

भोग लगाने की विधि

॥ अथ शब्द ॥

मोकूँ कहाँ ढूंढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।टेक।
ना तीर्थ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में, ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में।1।
ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, ना मैं योग सन्यास में।2।
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में, ना ब्रह्मण्ड आकाश में।
ना मैं त्रिकुटी भंवर गुफा में, सब श्वासन के श्वास में।3।
खोजी होय तुरंत मिल जाऊँ, एक पल ही की तलाश में।
कहै कबीर सुनों भई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में।4।

॥ अथ राग धनासरी ॥

तुहीं मेरे बेदं, तुहीं मेरे नादं। तुहीं मेरे अंत राम, तुहीं मेरे आदं।।1।। तुहीं मेरे तिलकं, तुहीं मेरे माला। तुहीं मेरे ठाकुर राम, रूप बिशाला।।2।। तुहीं मेरे बागं, तुहीं मेरे बेला। तुहीं मेरे पुष्प राम, रूप नबेला।।3।।

तुहीं मेरे तरूवर, तुहीं मेरे साखा। तुहीं मेरे बाणी राम, तुहीं मेरे भाषा।।4।। तुहीं मेरे पूजा, तुहीं मेरे पाती। तुहीं मेरे देवल राम, मैं तेरा जाती।।5।। तुहीं मेरे पाती, तुहीं मेरे पूजा। तुहीं मेरे तीर्थ राम, और नहीं दूजा।।6।। तुहीं मेरे कल्पवृक्ष और कामधैंना। तुहीं मेरे राजा राम, तुहीं मेरे सैंना।।7।। तुहीं मेरे मालिक, तुहीं मेरे मीरा। तुहीं मेरे सुलतान राम, तुहीं है वजीरा।।8।। तुहीं मेरे मुंदरा, तुहीं मेरे सेली। तुहीं मेरे मुतंगा राम, तुहीं मेरा बेलि।।9।। तुहीं मेरे चीपी, तुहीं मेरे फरुवा। मैं तेरा चेला राम, तुहीं मेरा गुरुवा।।10।। तुहीं मेरे कौस्तभ, तुहीं मेरे लालं। तुहीं मेरे पारस राम, तुहीं मेरे मालं।।11।। तुहीं मेरे हीरा, तुहीं मेरे मोती। तुहीं बैरागर राम, जगमग ज्योति।।12।। तुहीं मेरे पौहमी, धरनी अकाशा। तुहीं मेरे कूरंभ राम, तुहीं है कैलाशा।।13।। तुहीं मेरे सूरज, तुहीं मेरे चंदा। तुहीं तारायन राम, परमानंदा।।14।। तुहीं मेरे पौंना, तुहीं मेरे पानी। तेरी लीला राम, किनहूँ न जानी।।15।। तुहीं मेरे कार्तिक, स्वामी गणेशा। तेरा ही ध्यान राम,

धरूँ हमेशा।।16।। तुहीं मेरे लक्ष्मी, तुहीं मेरे गौरा। तुहीं मेरे सावित्री राम, ॐ अंग तोरा।।17।। तुहीं मेरे ब्रह्मा, शेष महेशा। तुहीं मेरे विष्णु राम, जय जय आदेशा।।18।। तुहीं मेरे इन्द्र, तुहीं है कुबेरा। तुहीं मेरे वरुण राम, तुहीं धर्म धीरा।।19।। तुहीं मेरे सरबंग, सकल व्यापी। तैंहीं आपनी राम, थापना थापी।।20।। तुहीं मेरे पिण्डा, तुहीं मेरे श्वासा। तेरा ही ध्यान राम, धरै गरीबदासा।।21।।

॥ रूमाल का शब्द ॥

द्रुपद सुता कूँ दीया लीर। जाके अनंत बधाये चीर। रूकमणि कर पकड़या मुसकाई, अनंत कहा मो कूँ समझाई। दुःशासन कूँ द्रौपदी पकरी, हमरी भक्ति सकल में सिखरी। जो हमरी भक्ति पछौड़ी होई, हमरा नाम न लेवै कोई। तन देही से पासा डारी, पौंहचे सूक्ष्म रूप मुरारी। खैंचत खैंचत खैंच कसीसा, सिर पर बैठे हैं जगदीशा। संखों चीर पितंबर झीने, द्रौपदी कारण साहिब कीने। संखों चीर पीतंबर डारे, दुःशासन से योद्धा हारे। द्रुपद सुता के चीर बढ़ाये, संख असंखौं पार न पाये।

नित बुन कपड़ा देते भाई। जाकै नौ लख बालद आई।
अबिगत केशव नाम कबीर। तातें टूटैं जम जंजीर।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पहली आरती हरि दरबारे, तेजपुंज जहां प्राण उधारे।1।
पाती पंच पौहप करैं पूजा, देव निंरजन और न दूजा।2।
खण्ड खण्ड में आरती गाजै, सकलमयी हरि जोति विराजै।3।
शान्ति सरोवर मंजन कीजै, जत की धोति तन पर लीजै।4।
ज्ञान अंगोछा मैल न राखै, धर्म जनेऊ सतमुख भाषै।5।
दया भाव तिलक मस्तक दीजै, प्रेम भक्ति का अचमन लीजै।6।
जो नर ऐसी कार कमावै, कंठी माला सहज समावे।7।
गायत्री सो जो गिनती खोवै, तर्पण सो जो तमक न होवै।8।
संध्या सो जो सन्धि पिछानै, मन पसरे कुं घट में आनै।9।
सो संध्या हमरे मन मानी, कहैं कबीर सुनो रे ज्ञानी।10।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ऐसी आरती त्रिभुवन तारे, तेजपुंज जहां प्राण उद्धारे।1।
पाती पंच पौहप करैं पूजा, देव निरंजन और न दूजा।2।
अनहद नाद पिण्ड ब्रह्मण्डा, बाजत अहर निश सदा अखण्डा।3।
गगन थाल जहां उड़गन मोती, चंद सूर जहां निर्मल ज्योति।4।

तनमन धन सब अर्पण कीन्हा, परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा ।5 ।
प्रेम प्रकाश भया उजियारा, कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा ।6 ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

संध्या आरती करो विचारी, काल दूत जम रहैं झख मारी ।1 ।
लाग्या सुषमण कूंची तारा, अनहद शब्द उठै झनकारा ।2 ।
उनमुनि संयम अगम घर जाई, अछै कमल में रहया समाई ।3 ।
त्रिकुटी संजम कर ले दर्शन, देखत निरखत मन होय प्रसन्न ।4 ।
प्रेम मगन होय आरती गावैं, कहैं कबीर भौजल बहुर न आवैं ।5 ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि दर्जी का मर्म न पाया, जिन यौह चोला अजब बनाया ।1 ।
पानी की सुई पवन का धागा, नौ दस मास सीमते लागा ।2 ।
पांच तत्त की गुदरी बनाई, चन्द सूर दो थिगरी लगाई ।3 ।
कोटि जतन कर मुकुट बनाया, बिच बिच हीरा लाल लगाया ।4 ।
आपै सीवैं आपे बनावैं, प्राण पुरूष कुं ले पहरावै ।5 ।
कहै कबीर सोई जन मेरा, नीर खीर का करै निबेरा ।6 ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ऐसी आरती अपरम्पारा । थाके ब्रह्मा बेद उच्चारा ।1 ।
अनंत कोटि जाकै शंभू ध्यानी । विष्णु ब्रह्मा संख बेद पढैं बांनी ।2 ।

इन्द्र अनंत मेघ रस माला। शब्द अतीत बिरध नहीं बाला।3।
चंद सूर जाकै अनंत चिरागा। शब्द अतीत अजब रंग बागा।4।
सात समुंद्र जाकै अंजन नैना। शब्द अतीत अजब रंग बैना।5।
अनंत कोटि जाकै बाजे बाजैं। पूर्ण ब्रह्म अमरपुर छाजैं।6।
तीस कोटि रामा औतारी। सीता संग रहंती नारी।7।
तीन पदम जाकै भगवाना। सप्त नील कन्हवा संग जान्या।8।
तीस कोटि सीता संग चेरी। सप्त नील राधा दे फेरी।9।
जाकै अर्ध रूंम पर सकल पसारा। ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।10।
दास गरीब कहै नर लोई। यौह पद चीन्हैं बिरला कोई।11।
गरीब, सतवादी सब संत हैं, अपने अपने धाम।
आजिज की अरदास है, सब संतन प्रणाम।12।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरु ज्ञान अमांन अडोल अबोल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, आन अस्थान रोप्या छुड़ानी।
दीनन के जी दयाल, भक्ति विरद दीजिये।
खाने जाद गुलाम, अपना कर लिजिये।टेक।
खाने जाद गुलाम, तुम्हारा हूँ सही।
मेहरबान महबूब, युगन युग पत रही।1।

बांदी का जाम गुलाम, गुलाम गुलाम हूँ।
खड़ा रहूँ दरबार सु, आठौं याम हूँ।2।
सेवक तलबदार, दर तुम्हारे कूक हीं।
औगुन अनंत अपार, पड़ी मोहि चूक हीं।3।
मैं घर का बांदीजादा, अर्ज मेरी मानिये।
जन कहता दास गरीब, अपना कर जानिये।4।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गरीब, जल थल साक्षी एक है, डूंगर डहर दयाल।
दशौं दिशा कूँ दर्शनं, ना कहीं जौरा काल।1।
गरीब, जै जै जै करुणामई, जै जै जै जगदीश।
जै जै जै तूं जगतगुरु, पूर्ण बिसवे बीस।2।
राग रूप रघुवीर है, मोहन जाका नाम।
मुरली मधुर बजावहीं, गरीबदास बलिजांव।3।
गरीब, बांदी जाम गुलाम की, सुन ले अर्ज आवाज।
यौह पाजी संग लीजिये, जब लग तुम्हरा राज।4।
गरीब, प्रलय कोटि अनंत हैं, धरनी अंबर धौल।
मैं दरबारी दर खड़ा, अचल तुम्हारी पौल।5।
गरीब, समर्थ तूं जगदीश है, सतगुरु साहिब सार।

मैं शरणागत आईया, तुम हो अधम उद्धार।6।
गरीब, संतो की फुलमाल है, वरनौं वित अनुमान।
मैं सबहन का दास हूँ, करो बंदगी दान।7।
गरीब, अर्ज अवाज अनाथ की, आजिज की अरदास।
आवन जावन मेटियो, दीज्यो निश्चल वास।8।
गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूँ, चाल विहंगम बीन।
सनकादिक पलड़ै नहीं, शंकर ब्रह्मा तीन।9।
गरीब, दूजा ओपन आप की, जेते सुरनर साध।
मुनिवर सिद्ध सब देखिया, सतगुरु अगम अगाध।10।
गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, या में मीन न मेख।11।
पूर्ण ब्रह्म कृपा निदान, सुन केशव करतार।
गरीबदास मुझ दीन की, रखियो बहुत संभार।12।
गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर राखो हंस।
यम किंकर चंपैं नहीं, उद्धर जात है वंस।13।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहै थीर।
दास गरीब उद्धारिया, सतगुरु मिले कबीर।14।

गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर है।
भक्ति हेत आन काया धर आये, अबिगत सत कबीर है।।
नानक दादू अगम अगाधू, तेरी जहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।।
कोटि भानु प्रकाश पूर्ण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी है सत्संगी, अबिगत का दीदार है।।
धन्य सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेट हीं।
तेज पुंज आन देह धर कर, इस विधि हम कूँ भेंट हीं।।
शब्द निवास आकाश वाणी, यौह सतगुरु का रूप है।
चन्द सूरज नहीं पवन ना पानी, ना जहां छाया धूप है।।
रहता रमता राम साहिब, अबिगत अलह अलेख है।
भूले पंथ विटंब वादी, कुल का खाविंद एक है।।
रूंम रूंम में जाप जप ले, अष्ट कमल दल मेल है।
सुरति निरति कूँ कमल पठवो, जहां दीपक बिन तेल है।।
हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवैणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।।

।।सत साहेब।।

गरीब, प्रपट्टन वह परलोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।

भक्ति हेत से उतरे, पाया हम दीदार।1।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलल पंख की जात।
काया माया ना वहाँ, नहीं पाँच तत्व का गात।2।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, उज्ज्वल हिरंबर आदि।
भलका ज्ञान कमान का, घालत है सर साधि।3।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुन्न विदेशी आप।
रोम रोम प्रकाश है, दीन्हा अजपा जाप।4।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मगन किये मुसताक।
प्याला प्याया प्रेम का, गगन मंडल गरगाप।5।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैन।
उर अंतर प्रकाशिया, अजब सुनाये बैन।6।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैल।
बजर पौलि पट खोल कर, ले गया झीनी गैल।7।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के तीर।
सब संतन सिरताज है, सतगुरु अदली कबीर।8।

॥ शब्द ॥

अब रस गोरस का सुनों बियाना। खीर खाण्ड साहिब दरबाना।
मोहन भोग मानसी पूजा। मेवा मिसरी का है कूजा।

लड्डू जलेबी लाड कचौरी। खुरमें भोगै आत्म बौरी।
दही बड़े नुकती प्रसादं। पूरी मांडे आदि अनादं।
धोवा दाल मुनक्का दाखं। गिरी छुहारे मेवा भाखं।
नमक और नूनि घृत कहावै। दूध दही तो सब मन भावै।
शक्कर गुड़ की होत पंजीरी। माहीं अजमायन घालैं पीरी।
जीरा हींग मिरच होंहि लाला। जब यौह कहिये अजब मसाला।
छाह छकनिया चिन्तामणी। गोरस पिया त्रिभुवन धणी।
पापड़ बीन मसाले सारे। छतीसौं व्यंजन अडकारे।
सहत आंम नींबू नौरंगी। कदली बेरं तूत सिरंगी।
येता भोग भुगावै कोई। परमात्म कै चढ़ै रसोई।
दास गरीब यह अन्न की महिमा। तीन लोक में जाका रहमा।

॥ शब्द ॥

आज मिलन बधाईयां जी, संगते भोग गुरां नूं लगया।
सुख देना दुःख मेटना, ताजा राखे तन।
सुर तेतीसौं खुश किए, नमस्कार तोहे अन्न।
अन्न जल साहिब रूप है, खुध्या तृषा जाये।
चारों युग प्रवान हैं, आत्म भोग लगाए।

जो अपनै सो और कै, एकै पीड़ पिछांन।
भूखों भोजन देत हैं, पौंहचैंगे प्रवान।
लख चौरासी जीव का, भोजन बसै आकाश।
कर्ता बरषै नीर होये, पूरै सब की आश।
देते को हर देत हैं, जहां तहां से आन।
अण देवा मांगत फिरैं, साहिब सुनैं ना कान।
धर्म तो धसकै नहीं, धसकैं तीनूं लोक।
खैरायत में खैर है, कीजै आत्म पोष।
एक यज्ञ है धर्म की, दूजी यज्ञ है ध्यान।
तीजी यज्ञ है हवन की, चौथी यज्ञ प्रणाम।
खुल्या भंडारा गैब का, बिन चिट्ठी बिन नाम।
गरीबदास मुक्ता तुलै, धन्य केशो बलि जाँव मैं।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी! तथा उन्हीं के अवतार बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज! तथा उन्हीं के स्वरूप परम पूज्य गुरूदेव सतगुरू रामपाल जी महाराज! आपका भोग प्रसाद तैयार है। आप अपनी पवित्र रसना से इसे पवित्र करने की कृपा करें।

हे परमात्मा! हम दीनों के टुकड़े को स्वीकार कीजिए। हे बन्दी छोड़! पाठ करते समय किसी भी पाठी द्वारा कोई पाठ्यक्रम में त्रुटि रही हो या किसी सेवक द्वारा सेवा में कमी रही हो तो हम तुच्छ बुद्धि जीवों को तुच्छ जानकर क्षमा करना परवरदिगार!

।।सत साहेब।।

॥ शब्द ॥

आज लग्या साहिब को भोग, दीन के टुकड़े पानी का।
कोई जग्या पूर्बला भाग, सफल हुआ दिन जिन्दगानी का।टेक।
व्यंजन छतीसों यह नहीं चावैं, जो मिल जावै रुचि रुचि पावैं।
प्रसाद अलूणा ये खा जावैं, भाव ले देख प्राणी का।1।
सम्मन जी ने भोग लगाया, सिर लड़के का काट कै लाया।
बन्दी छोड़ ने तुरन्त जिवाया, पाया फल संत यजमानि का।2।
जिन भक्तों के यह भोग लग जाए, उनके तीनों ताप नशाए।
कोटि तीर्थ का फल वो पाए, लाभ यह संतों की वाणी का।3।
संतों की वाणी है अनमोल, इसे ना समझ सकैं अनबोल।
साहिब ने भेद दिया सब खोल, अपनी सत्यलोक राजधानी का।4।

बली राजा ने धर्म किया था, हरि ने आ के दान लिया था।
पाताल लोक का राज दिया था, ऊँचा है दर्जा दानी का।5।
धर्म दास ने यज्ञ रचाई, बिन दर्शन नहीं जीऊं गुसाई।
दर्शन दे कर प्यास बुझाई, भाव लिया देख कुर्बानी का।6।
रह्या क्यों मोह ममता में सोय, जगत में जीवन है दिन दोय।
पता ना आवन हो कै ना होय, तेरे इस श्वांस सैलानी का।7।
जीव जो ना सतसंग में आया, भेद ना उसे भजन का पाया।
गरीब दास को भी बावला बताया,
क्या कर ले इस दुनिया स्यानी का।8।
साध संगत से भेद जो पाया,
गुरु रामदेवानन्द जी ने सफल बनाया।
संत रामपाल को राह दिखाया, श्री धाम छुड़ानी का।9।

।।सत साहेब।।

शंका – समाधान

निवेदन :- उपदेश (नाम दीक्षा) प्राप्त करने वाला भक्तात्मा यह सोचेगा कि गुरु जी कह तो रहे थे कि तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की पूजा नहीं करनी है। मन्त्र जाप उन्हीं के दिए हैं।

उनके लिए निवेदन है कि यह पूजा नहीं है। हम काल के लोक में रह रहे है। यहाँ हमें जो सुविधा चाहिये, वह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि ही प्रदान करेंगे।

जैसे हमने बिजली का कनेक्शन (लाभ) ले रखा है। उसका बिल (खर्चा) भरना है। हम बिजली वाले मंत्री की या विभाग की पूजा नहीं कर रहे। हम उनका बिल भरेंगे तो बिजली का लाभ मिलता रहेगा।

इसी प्रकार टैलीफोन (दूरभाष) का बिल व पानी का बिल आदि अदा करते रहेंगे तो हमें सुविधाएँ मिलती रहेंगी। आप शास्त्र विरुद्ध साधना करके भक्ति हीन हो

गए हो अर्थात् आप पुण्य हीन हो गए हो। जिस कारण से आपको धन लाभ आदि नहीं हो रहा। यह दास (रामपाल दास) आप का गारंटर (जिम्मेदार) बनकर इस काल लोक के एक ब्रह्मण्ड की शक्तियों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-गणेश-माता आदि) से आपको सर्व सुविधाएँ पुनः प्रारम्भ करवायेगा तथा आपने इस मन्त्र के जाप से इनका बिल भरते रहना है। जो मन्त्र प्रथम (सत सुकृत अविगत कबीर) है, यह आपकी पूजा है, यह पूर्ण परमात्मा का है तथा सत्यम् लाभ (फल) प्राप्त होगा।

सत्यम् का अर्थ अविनाशी अर्थात् हमें अविनाशी पद प्राप्त करना है। इस मन्त्र के चार महीने के बाद आप को सत्यनाम (सच्चा नाम) और मिलेगा जो दो मंत्र का होगा। उसका एक मंत्र काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड का ऋण उतारने का है। उसकी कमाई करके हमने ब्रह्म (क्षर पुरुष) अर्थात् काल का ऋण उतारना है। फिर यह काल हमें सर्व पापों से मुक्त कर देगा।

गीता अध्याय 18 के श्लोक 62-64,66 में वर्णन है :-

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत,
तत्प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम्।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! तू (सर्वभावेन) सब प्रकार से (तम्) उस परमेश्वर की (एव) ही (शरणम्) शरण में (गच्छ) जा। (तत्प्रसादात्) उस परमात्मा की कृपा से ही तू (पराम्) परम (शान्तिम्) शान्ति को तथा (शाश्वतम्) सदा रहने वाला सत् (स्थानम्) स्थान/धाम/लोक को अर्थात् सतलोक को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा।

अनुवाद : हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सदा रहने वाला सत् स्थान/धाम/लोक को अर्थात् सतलोक को प्राप्त होगा।

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 63

इति, ते, ज्ञानम्, आख्यातम्, गुह्यात्, गुह्यतरम्, मया,
विमृश्य, एतत्, अशेषेण, यथा, इच्छसि, तथा, कुरु।

अनुवाद : (इति) इस प्रकार (गुह्यात्) गोपनीय से (गुह्यतरम्) अति गोपनीय (ज्ञानम्) ज्ञान (मया) मैंने (ते) तुझसे (आख्यातम्) कह दिया (एतत्) इस रहस्ययुक्त ज्ञान को (अशेषेण) पूर्णतया (विमृश्य) भली–भाँति विचार कर (यथा) जैसे (इच्छसि) चाहता है (तथा) वैसे ही (कुरु) कर।

अनुवाद : इस प्रकार गोपनीय से अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुझसे कह दिया। इस रहस्ययुक्त ज्ञान को पूर्णतया भली-भाँति विचार कर। जैसे चाहता है, वैसे ही कर।

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 64

सर्वगुह्यतमम्, भूयः, श्रृणु, मे, परमम्, वचः,
इष्टः, असि, में, दृढम्, इति, ततः, वक्ष्यामि, ते, हितम्।

अनुवाद : (सर्वगुह्यतमम्) सम्पूर्ण गोपनीयों से अति गोपनीय (मे) मेरे (परमम्) परम रहस्ययुक्त (हितम्) हितकारक (वचः) वचन (ते) तुझे (भूयः) फिर (वक्ष्यामि) कहूँगा (ततः) इसे (श्रृणु) सुन (इति) यह पूर्ण ब्रह्म (मे) मेरा

(दृढम्) पक्का निश्चित (इष्टः) इष्टदेव अर्थात् पूज्यदेव (असि) है।

अनुवाद : सम्पूर्ण गोपनीयों से अति गोपनीय मेरे परम रहस्ययुक्त हितकारक वचन तुझे फिर कहूँगा, इसे सुन। यह पूर्ण ब्रह्म मेरा पक्का निश्चित इष्टदेव अर्थात् पूज्य देव है।

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 66

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज,
अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः।

अनुवाद : मेरी (सर्वधर्मान्) सम्पूर्ण पूजाओं को (माम्) मुझ में (परित्यज्य) त्यागकर तू केवल (एकम्) एक उस अद्वितीय अर्थात् पूर्ण परमात्मा की (शरणम्) शरण में (व्रज) जा। (अहम्) मैं (त्वा) तुझे (सर्वपापेभ्यः) सम्पूर्ण पापों से (मोक्षयिष्यामि) छुड़वा दूँगा तू (मा,शुचः) शोक मत कर।

अनुवाद : मेरी सम्पूर्ण पूजाओं को मुझ में त्यागकर तू केवल एक उस अद्वितीय अर्थात् पूर्ण परमात्मा की शरण में जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से छुड़वा दूँगा। तू

शोक मत कर।

उपरोक्त श्लोकों का भावार्थ है कि काल (ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष) कह रहा है कि अर्जुन तू मेरी शरण में रहना चाहता है तो जन्म तथा मृत्यु बनी रहेगी। यदि परम शान्ति तथा सत्यलोक जाना चाहता है तो उस पूर्ण परमात्मा की शरण में चला जा। उसके लिए मेरी सर्व धार्मिक पूजाएँ अर्थात् सत्यनाम के प्रथम मन्त्र के जाप की कमाई मुझ में छोड़ कर फिर सर्वभाव से उस एक (सर्वशक्तिमान अर्थात् जिसके बराबर दूसरा न हो, उस अद्वितीय परमेश्वर) की शरण में चला जा। फिर मैं तुझे सर्व पापों (ऋणों) से मुक्त कर दूँगा, तू चिन्ता मत कर तथा सत्यनाम के दूसरे मन्त्र की कमाई हम परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष को छोड़ देंगे क्योंकि हमने अक्षर पुरुष के लोक से होकर सत्यलोक जाना है, उसका किराया देना है। फिर तीसरा मन्त्र सत्यशब्द अर्थात् सारनाम मिलेगा जो सत्यलोक में स्थायित्व प्राप्त करवाएगा।

यदि कोई व्यक्ति विदेश गया हो। वहाँ उस पर सरकार का ऋण हो। फिर वापिस स्वदेश आना चाहेगा तो उसे पहले उस देश के ऋण से मुक्ति लेनी होगी। फिर (No Due Certificate) ऋण मुक्त प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा, तब उस का वापिस आने का पासपोर्ट बनेगा, नहीं तो उसे वापिस नहीं आने दिया जायेगा।

इसी प्रकार आप इस काल के लोक में शास्त्र विरुद्ध साधना करके भक्ति हीन होकर ऋणी हो गए हो। पहले आपको साहूकार बनाया जाएगा। उसके लिए कविर्देव (कबीर साहेब या कबिर् साहेब) ने मुझ दास को अपना नुमाईन्दा (Representative) बनाकर भेजा है। उस परमेश्वर की तरफ से यह दास आपका (Guarantor) जिम्मेवार बनेगा तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि शक्तियों से आपके पुनः कनेक्शन (सम्पर्क का लाभ) को प्रारम्भ करवाएगा। जो आपने इनके मन्त्र की कमाई करके किश्तों में बिल भरना है। जब तक आप यहाँ से मुक्त नहीं होते, तब तक आप को सर्व भौतिक

सुविधाएँ जोर-शोर से मिलती रहेंगी तथा आप पुण्यदान आदि करके अधिक भक्ति धनी बन सकोगे। दूसरे शब्दों में जैसे हमारे शरीर में कमल बने हैं। जब हम शरीर त्यागकर परमात्मा के पास जायेंगे तो हमें इन कमलों में से होकर जाना है। जैसे 1. मूल कमल में गणेश जी 2. स्वाद कमल में सावित्री-ब्रह्मा जी 3. नाभि कमल में लक्ष्मी तथा विष्णु जी 4. हृदय कमल में पार्वती और शिव जी 5. कण्ठ कमल में दुर्गा (अष्टंगी) है। इन कमलों से हम तब ही जा सकेंगे, जब हम इनका ऋण अदा कर देंगे। प्रथम उपदेश से आप के सर्व कमल खिल जाएँगे अर्थात् आप ऋण मुक्त हो जाओगे। जब आप अन्त समय में शरीर छोड़कर चलोगे तो आप का रास्ता साफ मिलेगा अर्थात् आपको सर्व ऋण मुक्त प्रमाण-पत्र तैयार मिलेगा।

परन्तु हमने पूजा अपने मूल मालिक कविर्देव (कबीर साहेब) की करनी है। जैसे पतिव्रता पत्नी पूजा तो अपने पति की करती है, परंतु यथोचित आदर

सबका करती है। जैसे देवर को पुत्रवत तथा जेठ को बड़े भाई की तरह तथा सास व ससुर को माता-पिता की तरह आदर देती है। परन्तु जो भाव अपने पति में होता है, वह अन्य में नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार कबीर भक्त को अपनी भक्ति सफल करनी है। इसलिए किसी अनजान के बहकावे में मत आना। पूर्ण विश्वास के साथ इस दास के द्वारा बताए भक्ति मार्ग पर लगे रहना। यह भक्ति सर्व शास्त्रों के आधार पर है।